वर्ग-8
हिन्दी
वसंत-3

5. चिट्ठियों की अनूठी दुनिया

अरविंद कुमार सिंह

शब्दार्थ- अजीबो-गरीब = आश्चर्यजनक, संचार = सूचना प्रसारण का माध्यम, एसएमएस = लघु संदेश सेवा, दायरा = क्षेत्र, अहमियत = महत्त्व, हरकारे = सूचना लाने-ले जाने वाले संदेशवाहक; तह = परत, गहराई, मिसाल = उदाहरण, विरासत = पैतृक धरोहर, उद्यमी = परिश्रमी, हस्तियों = महत्वपूर्ण व्यक्ति, दिग्गज = मशहूर, प्रशस्ति पत्र = प्रशंसा-पत्र, मुस्तैद = सजग, खुशदिल = अच्छी छवि, आलीशान = शानदार, ढाणी = अस्थायी निवास, बहुआयामी = अनेक उद्देश्य, देवदूत = फरिश्ता।

बहु विकल्पीय प्रश्न -

(i) महान हस्तियों की सबसे बड़ी यादगार उनके द्वारा लिखे पत्र ही हैं। भारत में इस श्रेणी में किसे सबसे आगे रखा जा सकता है-
(क) सुभाषचन्द्र बोस (ख) जवाहरलाल नेहरु (ग) लाल बहादुर शास्त्री (घ) महात्मा गाँधी।
उत्तर - (घ) महात्मा गाँधी।

(ii) विश्व डाक संघ ने किस वर्ष से कम आयुवर्ग के बच्चों के लिए पत्र लेखन प्रतियोगिताएँ आयोजित करना शुरु किया?
(क) 14 वर्ष (ख) 16 वर्ष (ग) 10 वर्ष (घ) 20 वर्ष।
उत्तर - (ख) - 16 वर्ष

(iii) 'पिता का पत्र पुत्री के नाम' पत्र पंडित नेहरु ने किसे लिखे?
(क) इंदिरा गाँधी (ख) कमला नेहरु (ग) विजयालक्ष्मी पंडित (घ) कोई नहीं।
उत्तर - (क) - इंदिरा गाँधी।

(iv) कन्नड़ में पत्र को क्या कहते हैं?
(क) उत्तरम् (ख) पाती (ग) कागद (घ) कडिद।
उत्तर - (ग) - कागद

(v) नये लेखकों को प्रेरक जवाब कौन देते थे?
(क) हरिवंशराय बच्चन (ख) प्रेमचन्द (ग) जयशंकर प्रसाद (घ) सुमित्रानंदन पंत।
उत्तर - (ख) - प्रेमचन्द।

लघुउत्तरीय प्रश्न - ②

① पाठ में पत्रों से संबंधित किन-2 पुस्तकों का वर्णन किया गया है?
उत्तर - पाठ में पंत के दो सौ पत्र बच्चन के नाम, निराला के पत्र हमको लिख्यो है का तथा पत्रों के आइने में दयानंद सरस्वती, पिता का पत्र पुत्री के नाम, महात्मा और कवि आदि पुस्तकों का वर्णन किया गया है।

② नेहरु ने सन् 1953 ई० में पत्रों के बारे में क्या कहा था?
उत्तर - नेहरु ने 1953 ई० में पत्रों के बारे में कहा था, "हजारों साल तक संचार का साधन केवल हरकारे या तेज घोड़े रहे हैं, उसके बाद पहिया का आविष्कार हुआ। पर रेलवे और तार से भारी बदलाव आया। तार ने रेल से भी तेज गति से संवाद पहुँचाने का काम शुरु किया। अब टेलीफोन, वायरलेस, राडार, आदि दुनिया बदल रहे हैं।"

③ पाठ के अनुसार भारत में रोज कितनी चिट्ठियाँ डाली जाती थीं?
उत्तर - उस समय भारत में रोज साढ़े चार करोड़ चिट्ठियाँ डाक में डाली जाती थीं।

④ 'पत्रों का जवाब देने के मामले में गाँधी जी जैसा बेजोड़ कोई नहीं था', कैसे?
उत्तर - गाँधीजी के पास देश-विदेश से पत्र आते रहते थे। जैसे ही उन्हें पत्र मिलता, वे तुरंत उसका जवाब लिख देते थे। वे स्वहस्त पत्र ही अधिक लिखते थे। यदि पत्र लिखते-2 हाथ में दर्द होने लगता था तो वे दूसरे हाथ से भी पत्र लिखने लगते थे। इस प्रकार उनके जैसा पत्रों का जवाब देने में कोई बेजोड़ नहीं था।

⑤ किन-किन लोगों की पत्र रचनाएँ अनुसंधान का विषय हैं।
उत्तर - बड़े-बड़े लेखकों, पत्रकारों, उद्यमियों, कवि, प्रशंसकों, संन्यासी, किसानों आदि लोगों की पत्र रचनाएँ अनुसंधान का विषय हैं।

दीर्घउत्तरीय प्रश्न -

1. पत्र जैसा संतोष फोन या एसएमएस का संदेश क्यों नहीं दे सकता?
उत्तर - पत्र जैसा संतोषप्रद संदेश फोन या एसएमएस नहीं दे सकते क्योंकि फोन या SMS के संदेशों को भविष्य के लिए संभालकर नहीं रखे जा सकते। पत्र यादों को सहेजकर रखते हैं परन्तु फोन या SMS नहीं। संभालकर रखे गये पत्रों का भविष्य

Scanned with CamScanner

में कभी भी पढ़ सकते हैं लेकिन फोन या SMS को अधिक समय तक नहीं रखा जा सकता। बड़े-बड़े लेखकों, पत्रकारों, डायरी, कवि, प्रशासक आदि के पत्रों को अनुसंधान का विषय बनाया जा सकता है, लेकिन फोन या SMS को नहीं।

(1) पत्र को खत, कागद, उत्तरम्, जाबू, लेख, कडिद, पाती, चिट्ठी इत्यादि कहा जाता है। इन शब्दों से संबंधित भाषाओं के नाम बतावें।

उत्तर (क) खत - उर्दू
(ख) उत्तरम् - तेलुगु
(ग) लेख - तेलुगु
(घ) पाती - हिन्दी
(ङ) पत्र - संस्कृत
(च) कागद - कन्नड़
(छ) जाबू - तेलुगु
(ज) कडिद - तमिल
(झ) चिट्ठी - हिन्दी

2. पत्र लेखन कला के विकास के लिए कौन-कौन प्रयास हुए लिखें।

उत्तर - पत्र लेखन कला को विकसित करने के लिए विद्यालयी पाठ्यक्रमों में पत्र लेखन का विषय शामिल किया गया। केवल भारत में ही नहीं, बल्कि विश्व के अन्य कई देशों में भी प्रयास किये गये। विश्व डाक संघ की ओर से 16 वर्ष से कम आयु वर्ग के बच्चों के लिए पत्र लेखन प्रतियोगिताएँ आयोजित करने का कार्यक्रम सन् 1972 ई० में शुरू किया गया।

(4) पत्र धरोहर हो सकते हैं लेकिन एस एम एस क्यों नहीं? तर्क दीजिए।

उत्तर - पत्र धरोहर हो सकते हैं, परन्तु एस एम एस नहीं क्योंकि हम पत्रों को भविष्य के लिए संभालकर रख सकते हैं लेकिन SMS को हम जल्दी ही भूल जाते हैं। जैसे, आज भी महान हस्तियों द्वारा लिखा गया पत्र संग्रहालयों में संग्रहित है, जो आज हमारी धरोहर हैं, आजादी के पहले जो अंग्रेज अफसरों ने अपने परिजनों को पत्र लिखा, वे आगे चलकर अत्यंत महत्व की वस्तु बन गये। पंडित नेहरु, गाँधी, भगत सिंह आदि जैसी महान हस्तियों द्वारा लिखे गये पत्र धरोहर बन चुके हैं।

Scanned with CamScanner

6. भगवान के डाकिए

रामधारी सिंह 'दिनकर'

शब्दार्थ - डाकिए = पत्रवाहक, महादेश = महाद्वीप, बाँचना = पढ़ना, आँकना = अनुमान लगाना, सुगंध = खुशबू, सौरभ = सुगंध, पाँखों = पंखों तिरता = तैरता है, गिरता = बरसता है।

राष्ट्रकवि रामधारी सिंह 'दिनकर' ने 'भगवान के डाकिए' कविता में मानवतावादी भावना व्यक्त की है। कवि ने प्रकृति के अंग पक्षी और बादल को भगवान के डाकिए कहा है। जैसे, पक्षी मानव द्वारा निर्मित राज्य, देश, महाद्वीप की सीमा को न मानते हुए चारों तरफ आते-जाते हैं। बादल अन्य देशों में भी जाकर बरसते हैं। पक्षी पेड़-पौधों पर बैठते हैं, वे अपने पंखों को फड़फड़ाकर एक देश की सुगंध दूसरे देश तक ले जाते हैं। इसी प्रकार बादल से बरसने वाला पानी वाष्प बनकर दूसरे देशों में जाकर भी बरसता है। इसी कारण हम पक्षी और बादल को भगवान के डाकिए मानते हैं।

कवि का कहना है कि पक्षी और बादल को भगवान ने बनाया है। वे डाकिये का कार्य करते हैं। पक्षी अपना संदेश देश-विदेश में सुनाते हैं। बादल पानी बरसाकर भी अपना संदेश देश-विदेश में सुनाते हैं। हम मानव अज्ञानतावश समझ नहीं पाते हैं किन्तु उनकी लायी चिट्ठियाँ पेड़-पौधे, पानी, पहाड़ पढ़ते हैं। अर्थात् ये सभी पक्षी और बादल की भावना को समझते हैं।

पक्षी और बादल द्वारा लायी गई जिन चिट्ठियों को मनुष्य नहीं पढ़ पाता, उन्हें पेड़-पौधे, पहाड़, पानी पढ़ते हैं। इन चिट्ठियों से प्राप्त प्रेम, सद्भाव और एकता का संदेश ये पेड़-पौधे, धरती, पहाड़ बिना किसी भेदभाव के अपने देश में ही नहीं अन्य देशों में पहुँचाते हैं। हम मानव केवल अनुमान ही कर पाते हैं कि धरती द्वारा भेजा गया सुगंध हवा में तैरते हुए, पक्षियों के पंखों पर तैरते हुए, देश की सीमाओं का बंधन तोड़ते हुए किसी अन्य देश के वातावरण में घुल-मिल जाता है। प्रकृति द्वारा भेदभाव न करने का एक उदाहरण यह भी है कि किसी भी देश की नदियाँ, सागर, झील, समुद्र आदि का पानी वाष्प बनकर उड़ता है तथा यह जलवाष्प ठंढा होने पर वर्षा के रूप में अपने ही देश में नहीं; बल्कि अन्य

Scanned with CamScanner

देशों में भी वर्षा कराते हैं।

बहुविकल्पीय प्रश्न -

i. 'पेड़-पौधे, पानी, पहाड़' पंक्ति में कौन सा अलंकार है?
(क) यमक (ख) रूपक (ग) अनुप्रास (घ) उत्प्रेक्षा ।
उत्तर - (ग) - अनुप्रास ।

ii. हवा का पर्यायवाची है -
(क) पवन (ख) समीर (ग) वायु (घ) इनमें से सभी ।
उत्तर - (घ)

iii. कवि ने भगवान के डाकिये किसे कहा है -
(क) पक्षियों को (ख) पृथ्वी को (ग) आकाश को (घ) मनुष्यों को ।
उत्तर - (क)

iv. एक देश की धरती दूसरे देश को भेजती है -
(क) स्वर्ण (ख) सुगंध (ग) फूल (घ) फल ।
उत्तर - (ख)

v. किनकी लायी चिट्ठियाँ पेड़, पौधे, पानी और पहाड़ समझ पाते हैं
(क) वर्षा की (ख) बादलों की (ग) वायु की (घ) किसी की नहीं ।
उत्तर - (ख)

लघुउत्तरीय प्रश्न -

i. कवि ने किस-किस को भगवान के डाकिये कहा है।
उत्तर - कवि ने पक्षी और बादल को भगवान का डाकिया कहा है।

ii. इस कविता से आपको क्या प्रेरणा मिलती है।
उत्तर - इस कविता से हमें यह प्रेरणा मिलती है कि पक्षियों तथा बादलों की तरह हमें भी भेदभाव व द्वेष त्यागकर, प्यार व सौहार्द भाव से रहना चाहिए एवं दूसरों के साथ प्रेमपूर्ण व्यवहार करना चाहिये ।

iii. इस कविता में कवि ने पक्षियों और बादलों की क्या विशेषता व्यक्त की है।
उत्तर - इस कविता के माध्यम से कवि ने बताया है कि पक्षी व बादल देश, राज्य, महाद्वीप की सीमा के अधीन नहीं होते, वे उन्मुक्त रूप से स्वतंत्र होते हैं जिसके कारण वे एक देश का संदेश दूसरे देश में जाकर सुनाते हैं तथा सद्भावना का परिचय देते हैं।

Scanned with CamScanner

iv. "और एक देश का भाप दूसरे देश में पानी बनकर गिरता है।" से कवि का क्या तात्पर्य है?

उत्तर - कवि के कहने का तात्पर्य यह है कि एक देश की नदियों, तालाबों, झीलों तथा समुद्र से भाप बनकर उड़ा जल बादलों की मदद से दूसरे देश में पहुँचकर वर्षा कर जल बरसाते हैं। ये बादल किसी भेदभाव के एक देश का जल दूसरे देश में बरसा कर भगवान द्वारा दिये गये सद्भावना के संदेश का प्रचार सर्वत्र करते हैं।

v. पक्षियों तथा बादलों द्वारा लाये गये संदेशों को मनुष्य क्यों नहीं समझ पाता है बतावें।

उत्तर - मानव स्वभाव से ही एक स्वार्थी प्राणी है। वह प्रकृति द्वारा दिये गये प्रेम, सद्भाव, सौंदर्य एवं एकता के संदेश को इसलिए नहीं समझ पाता है क्योंकि वह अपने स्वार्थ में लिप्त रहता है। वह प्रकृति के इन संदेशों के अनुसार व्यवहार नहीं करता है।

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न -

1. कवि ने पक्षी और बादल को भगवान के डाकिये क्यों बताया है? स्पष्ट करें।

उत्तर - कवि ने पक्षी और बादल को भगवान के डाकिये इसलिए कहा है कि ये एक देश से होते हुए दूसरे देश में जाकर सद्भावना का संदेश देते हैं, भगवान का यही संदेश ये इन तक पहुँचाते हैं कि इन्हें भी उनकी तरह आचरण करना चाहिये तथा आपस में मिल-जुलकर प्रेमपूर्वक अपना जीवन व्यतीत करना चाहिये।

ii. पक्षी और बादल द्वारा लायी गई चिट्ठियाँ कौन-कौन पढ़ पाते हैं लिखें।

उत्तर - पक्षी और बादल द्वारा लायी गई चिट्ठियों को पेड़-पौधे, पत्ती, पहाड़ ही पढ़ पाते हैं। प्रकृति के ये विविध उपादान पंक्षी और बादल से प्रभावित होते हैं। इन्हें उनकी भाषा भली प्रकार समझ में आ जाती है।

iii. किन पंक्तियों का भाव है -

(a) पक्षी और बादल प्रेम, सद्भाव और एकता का संदेश एक देश से दूसरे देश को भेजते हैं।

उत्तर - उक्त भाव व्यक्त करने वाली पंक्तियाँ निम्न प्रकार की हैं -

Scanned with CamScanner

पक्षी और बादल

ये भगवान के डाकिये हैं,
जो एक महादेश से
दूसरे महादेश को जाते हैं।
हम तो समझ नहीं पाते हैं,
मगर इनकी लायी चिट्ठियाँ,
पेड़, पौधे, पानी और पहाड़,
बाँचते हैं।

(ख) प्रकृति देश-देश से भेदभाव नहीं करती। एक देश से उठा बादल दूसरे देश में बरस जाता है।

अथवा - उक्त भाव व्यक्त करने वाली पंक्तियाँ निम्न प्रकार की हैं-

और एक देश का भाप
दूसरे देश में पानी
बनकर गिरता है।

iv. पक्षी और बादल की चिट्ठियों में पेड़-पौधे, पानी और पहाड़ क्या पढ़ पाते हैं?

उत्तर - पक्षी और बादल की चिट्ठियों में पेड़-पौधे, पानी और पहाड़ भगवान के द्वारा भेजा हुआ एकता का संदेश पढ़ पाते हैं। इस संदेश का अमल करते हुए नदियाँ समान भाव से सभी लोगों में अपने पानी को बाँटती है। पहाड़ भी समान रूप से सबके साथ खड़ा रहता है। पेड़-पौधे समान रूप से अपने फल, फूल और अपने सुगंध को बाँटते हैं, कभी किसी से भेदभाव नहीं करते हैं। इस प्रकार यह सब भगवान के इस संदेश को समस्त संसार में प्रचार करते हुए सद्भावना का संदेश देते हैं।

v. "एक देश की धरती दूसरे देश को सुगंध भेजती है"- भाव स्पष्ट करें।

उत्तर - इस पंक्ति का भाव यह है कि प्रकृति में कहीं भी किसी प्रकार का भेदभाव नहीं होता। प्रकृति उदार है वह पहाड़, नदी, देशों की राजनैतिक सीमाओं में बँधकर नहीं रहती। हवा, सुगंध सूर्य, चन्द्रमा का प्रकाश सर्वव्याप्त है, इन्हें कोई रोक नहीं सकता है। अतः मानव को हमेशा इनसे प्रेरणा लेनी चाहिए कि संसार को ही अपना परिवार समझें। प्रत्येक मानव को प्रेम, सौहार्द, सद्भावना से मिल-जुलकर रहना चाहिए।

Scanned with CamScanner

7. क्या निराश हुआ जाए

हजारी-प्रसाद द्विवेदी

आश्चर्य - तस्करी - चोरी से सीमा पार माल ले जाने की क्रिया, प्रत्यारोप - किसी व्यक्ति द्वारा दोषी ठहराना, गह्वर = गहरा एवं अंधेरा स्थान, मनीषी = ज्ञानी व्यक्ति, जीविका = रोजी-रोटी का साधन, निरीह = इच्छा एवं तृष्णा रहित, श्रमजीवी = काम करके जीवन बिताने वाले, फरेब = झूठ, भीरु = डरपोक, बेबस = असहाय, चरम और परम = आखिरी और सबसे ऊँचा, कोटि = करोड़, रस = आनंद, गरिमा = महिमा, अवांछित = अनचाहा, वंचना = धोखा, गंतव्य = जाने योग्य, मंजिल, जवाब दे देना = काम करने की स्थिति में न होना, हवाइयाँ उड़ना = डर जाना, कातर = दुःखी, मुद्रा = भाव सूचक स्थिति, ढाँढ़स देना = दिलासा या तसल्ली देना।

बहुविकल्पीय प्रश्न -

i. टिकट बाबू ने लेखक को कितने रुपये लौटाये?
(क) पचास (ख) बीस (ग) नब्बे (घ) सौ।
उत्तर - (ग)

ii. बस यात्रा के दौरान लेखक के साथ उसके कितने बच्चे थे?
(क) चार (ख) दो (ग) पाँच (घ) तीन।
उत्तर - (घ)

iii. लेखक के बच्चे किस चीज के लिए व्याकुल थे?
(क) चाय (ख) पानी (ग) भोजन (घ) टॉफी।
उत्तर - (ख)

iv. कंडक्टर उतर गया और क्या लेकर चलता बना?
(क) साइकिल (ख) स्कूटर (ग) मोटर (घ) बस।
उत्तर - (क)

v. लेखक किस क्लास के डिब्बे में यात्रा कर रहा था?
(क) फर्स्ट क्लास (ख) थर्ड क्लास (ग) सेकंड क्लास
(घ) इनमें से कोई नहीं।
उत्तर - (ग)

Scanned with CamScanner

प्रश्नोत्तर —

i. लेखक ने लेख का शीर्षक 'क्या निराश हुआ जाए' क्यो रखा है? क्या आप इससे भी बेहतर शीर्षक बता सकते हैं?

उत्तर - लेखक ने इस लेख का शीर्षक 'क्या निराश हुआ जाए' उचित रखा है। आजकल हम आराजकता की जो घटनाएँ अपने आसपास घटते हुए देखते हैं, उनसे हमारे मन में निराशा आ जाती है। लेकिन लेखक ने हमें उस समय समाज के मानवीय गुणों से भरे लोगों को और उनके कार्यों को याद करने के लिए कहा है, जिससे हम निराश न हों। इस लेख का अन्य शीर्षक हम 'निराशा से आशा' भी रख सकते हैं।

ii. "आदर्शों की बातें करना तो बहुत आसान है, पर उन पर चलना बहुत कठिन है।" स्पष्ट करें।

उत्तर - मैं इस बात से पूर्णतया सहमत हूँ कि आदर्शों की बातें करना तो बहुत आसान है, पर उन पर चलना बहुत कठिन है। इसका तर्क तो यह है कि हम सब आदर्शों की बातें तो करते हैं, पर उनका पालन करने में हमारे सामने नाना प्रकार की समस्याएँ तथा स्वार्थपूर्ण मनोवृत्ति आ जाती है। जैसे - हम दहेज के विरोध में आदर्श की बातें उस समय करने लगते हैं, जब हमें अपनी लड़की की शादी करनी होती है, परन्तु इस आदर्श का पालन हम तब नहीं कर पाते हैं जब हमें अपने बेटे की शादी करनी होती है। हमारी स्वार्थपूर्ण मनोवृत्ति हमारे सामने आ खड़ी होती है और हम अपने ही आदर्श का पालन करने में असमर्थ हो जाते हैं।

iii. आपके विचार से हमारे महान विद्वानों ने किस तरह के भारत के सपने देखे थे? लिखें।

उत्तर - मेरे विचार में हमारे विद्वानों ने भारत के लिए सपना देखा था कि भारत में कोई गरीब, दुःखी, निरक्षर न रहे। सभी स्वस्थ हों। देश भ्रष्टाचार, हिंसा, आतंकवाद, घृणा, चोरी, लूट खसोट आदि से मुक्त हो। लोगों के बीच समरसता हो तथा प्रसन्न हों।

iv. आपके सपनों का भारत कैसा होना चाहिए? लिखें।

उत्तर - हमारे सपनों का भारत प्रदूषणमुक्त, हरा-भरा तथा विकसित देश के रूप में हो, जिसमें हर हाथ को काम मिले, सभी को शिक्षा, स्वास्थ्य तथा पेट भर भोजन मिले। लोगों के बीच भाईचारा तथा एक-

Scanned with CamScanner

दूसरे के लिए प्यार एवं सम्मान है। भारत पुन: एकबार ज्ञान के क्षेत्र में विश्वगुरु की संज्ञा से विभूषित हो जाए।

v. लेखक जब अपनी पत्नी व बच्चों के साथ बस यात्रा कर रहा था तब बस के साथ क्या घटना घटी?

उत्तर - लेखक जब अपनी पत्नी व बच्चों के साथ बस यात्रा कर रहा था तो उस समय बस में कुछ खराबी हो गई थी।

vi. कंडक्टर ने बस अड्डे से क्या लेकर आया?

उत्तर - कंडक्टर ने बस अड्डे से बच्चों के लिए पानी और दूध लेकर आया।

vii. लेखक ने मन ही मन क्यों कहा कि निराश होने की जरूरत नहीं है?

उत्तर - लेखक ने मन ही मन ऐसा इसलिए कहा कि लेखक ने महसूस किया कि समाज में ईमानदारी और मानवता अभी भी विद्यमान है और धोखा, ठगी जैसी तत्वों के कारण इनका अस्तित्व समाप्त नहीं हुआ है।

viii. कविवर रविन्द्रनाथ ठाकुर ने अपने प्रार्थना गीत में भगवान से क्या प्रार्थना की थी?

उत्तर - कविवर रविन्द्रनाथ ठाकुर ने अपने प्रार्थना गीत में भगवान से प्रार्थना की थी कि संसार में केवल नुकसान ही उठाना पड़े, धोखा ही खाना पड़े तो ऐसे अवसरों पर भी हे प्रभो! मुझे ऐसी शक्ति दो कि मैं तुम्हारे ऊपर संदेह न करूं।

Scanned with CamScanner

8. यह सबसे कठिन समय नहीं

जया जादवानी

शब्दार्थ - कठिन समय = बुरे दिन, झरती हुई = गिरती हुई, थामना = पकड़ना, गंतव्य = मंजिल, वक्त = समय, सदियाँ = कई सौ सालों का समय, तमाम = सारे, अंतरिक्ष = आकाश, खबर = समाचार,

कविता के बारे में कवयित्री ने स्पष्ट किया है कि समय बदल रहा है किंतु हमें निराश होने की जरूरत नहीं है। अभी जीवन जीने के प्रति ललक होनी चाहिए। चिड़िया अपने चोंच में तिनका लेकर घोंसला बनाने जाती है, वह रचनात्मक सोच रखती है। गिरती हुई पत्तियों को रोकने के लिए मानव हाथ बढ़ाना चाहता है। भीड़ वाले स्टेशनों से रेलगाड़ी का जाना यह संकेत करता है कि अभी कोई क्रांति कर रहा है। गाड़ी अपने अंतिम मंजिल तक अवश्य पहुँच जाएगी। सूर्यास्त होने की चेतावनी देकर कोई सुरक्षित घर में आने को कहता है। दादी-नानी कहानियाँ सुनाकर बच्चों के मन में एक उत्साह जगाए रखती थीं, वही स्थिति आज भी है। आज भी दादी बच्चों को प्रेमपूर्वक अंतरिक्ष लोक की कहानियाँ, परी लोक की कहानियाँ सुनाती रहती है जो शेष रह गये हैं। उनकी कहानियाँ दादी इसी प्रकार सुनाती रहेगी। अतः समाज और जीवन से निराश होने की जरूरत नहीं है मनुष्यता अभी भी बाकी है।

संदर्भ - प्रस्तुत पद्यांश हमारी पाठ्य-पुस्तक 'वसंत भाग-3' में संकलित है। यह अंश 'सबसे कठिन समय नहीं' से लिया गया है। इसकी कवयित्री 'जया जादवानी' जी हैं।

वर्तमान जीवन की स्थितियों पर प्रकाश डालते हुए वे कहती हैं कि अभी इतने बुरे दिन नहीं आये हैं कि निराश हुआ जा सके। चिड़िया की ओर संकेत करती हुई कहती हैं कि वह भी अपने चोंच में तिनका लेकर घोंसला बनाने की तैयारी में उड़ान भर रही है। पेड़ से गिरने वाली पत्तियों को रोकने के लिए भी हाथ तत्पर हैं अर्थात गिरते हुए व्यक्ति को सहायता प्रदान करने वाले हाथ आज भी हैं। रेलवे पड़ावों पर अभी सन्नाटा नहीं है। वहाँ भी लोगों की भीड़ तथा चहल-पहल है, जिसके कारण व्यक्ति अपने प्रियजनों से मिलने को बेचैन हैं। रेलगाड़ी से जाने वाला व्यक्ति जाने को तैयार है तथा दूसरी तरफ उसके आने के इंतजार में घर वाले बैठे हैं।

Scanned with CamScanner

अतः मानव को आशावादी होना चाहिये। आखिर मानवता निर्माण का प्रतिनिधि है।

कवयित्री कहती हैं कि निराश होने की जरूरत नहीं है, आज भी कोई प्रियजन आपकी प्रतीक्षा में बेचैन है, वह कह रहा है कि सूर्य अस्त होने का समय होने वाला है। इसलिए जल्दी से आ जाओ। अर्थात् व्यक्ति के सुख-दुःख का ध्यान रखने वाले लोग अब भी हैं। इस माहौल में निराश होने की जरूरत नहीं है। इस दुनिया में अभी भी बहुत कुछ बचा हुआ है।

भारतीय संयुक्त परिवारों में घर के बड़े-बूढ़ों द्वारा बच्चों को प्राचीनकाल से ही कहानियाँ सुनाई जाती रही हैं। उस परंपरा की याद दिलाते हुए कवयित्री कहती हैं कि आज दादी-नानी द्वारा प्राचीनकाल से सुनी जाने वाली कहानी का आखिरी हिस्सा सुनाते हुए कहा जाता है कि कुछ लोग अंतरिक्ष के उस पार सैर करने गये थे। वहाँ पर किसी संकट में फँसने के कारण वापस नहीं आ सके। उन लोगों की कुशलता का समाचार लेकर अंतरिक्ष के पार की दुनिया से बस आती है और धरती पर रहने वाले हजारों बच्चों को कुशलता का समाचार देती हैं। वही कुशलता का समाचार लाने वाली ये बसें भविष्य में भी चलती रहेंगी। जब धरती पर इतना सबकुछ बचा है तो हे मानव, तुम्हें तनिक भी निराश नहीं होना चाहिए। निःसंदेह इस समय जैसा वातावरण है वह सबसे कठिन समय नहीं है।

बहुविकल्पीय प्रश्न —

i. चिड़िया चोंच में क्या दबाये हुए है?

(क) रुई (ख) तिनका (ग) कंकड़ (घ) कीड़ा।

उत्तर - (ख)

ii. 'कहता है कोई किसी को' पंक्ति में कौन सा अलंकार है?

(क) रूपक (ख) उत्प्रेक्षा (ग) अनुप्रास (घ) उपमा।

उत्तर - अनुप्रास (ग)

iii. कविता में कौन सा छंद प्रयुक्त हुआ है?

(क) सवैया (ख) चौपाई (ग) कुंडलिया (घ) इनमें से कोई नहीं।

उत्तर - (घ)

Scanned with CamScanner

iv. 'यह कठिन समय नहीं' है। की कवयित्री हैं - (13)
(क) जया जादवानी (ख) महादेवी वर्मा (ग) सुभद्रा कुमारी चौहान (घ) मीराबाई
उत्तर - (क)
v. बच्चों को सदियों से कहानी कौन सुना रही हैं ?
(क) ताई (ख) चाची (ग) नानी (घ) बुआ ।
उत्तर - (ग)

प्रश्नोत्तर

i. बूढ़ी नानी सदियों से बच्चों को कौन सी कहानी सुना रही हैं ?
उत्तर - बूढ़ी नानी सदियों से बच्चों को एक बस की कहानी सुना रही है जो अंतरिक्ष के पार से वहाँ के लोगों की खबर लेकर आएगी।

ii. 'अभी भी झरती हुई पत्ती थामने को बैठा है हाथ एक' पंक्तियों से कवयित्री का क्या तात्पर्य है ?
उत्तर - इन पंक्तियों से कवयित्री का तात्पर्य है कि मनुष्य को निराश नहीं होना चाहिए क्योंकि वर्तमान में भी किसी गिरते हुए व्यक्ति को सहारा देने वाले लोग विद्यमान हैं।

iii. कौन सूर्य अस्त होने के समय आपकी प्रतीक्षा में बेचैन रहते हैं ?
उत्तर - हमारे प्रियजन जो हमारे सुख-दुःख का ध्यान रखते हैं तथा हमारी चिंता करते हैं, वे लोग सूर्यास्त होने पर हमारी प्रतीक्षा में बेचैन रहते हैं।

iv. इस कविता से आपको क्या शिक्षा मिलती है ?
उत्तर - इस कविता से हमें यह शिक्षा मिलती है कि हमें निराश नहीं होना चाहिए क्योंकि अभी समय इतना बुरा नहीं आया है। आज भी मानवता, प्रेम-भाव और सौहार्द विद्यमान है जिसके कारण समाज में पारस्परिक प्रेम बना हुआ है। हमें अपने जीवन में आशा का संचार करते हुए दूसरों की सहायता करने की प्रेरणा मिलती है।

v. इस कविता में जीवन के प्रति कवयित्री का कौन सा दृष्टिकोण झलकता है ?
उत्तर - इस कविता में कवयित्री का जीवन के प्रति आशा का दृष्टिकोण दिखाई पड़ता है। वह जीवन में निराश नहीं होना चाहती क्योंकि कोई प्रियजन आपका इंतजार कर रहा है, जो आपसे प्रेम व आपकी चिंता करता है।

Scanned with CamScanner

vi. "यह कठिन समय नहीं है?" यह बताने के लिए कविता में (14)
कौन-कौन से तर्क प्रस्तुत किये गये हैं ? स्पष्ट करें।
उत्तर - "यह कठिन समय नहीं है" - यह बताने के लिए कवयित्री ने निम्न तर्क प्रस्तुत की हैं -
(क) अभी भी चिड़िया चोंच में तिनका दबाये उड़ने को तैयार है क्योंकि वह घोंसले का निर्माण करना चाहती है।
(ख) एक हाथ झड़ती हुई पत्ती को सहारा देने के लिए बैठा है।
(ग) अभी भी एक रेलगाड़ी मंजिल पहुँचने वाले स्थान तक जाती है।
(घ) नानी-दादी की कथा का आखिरी हिस्सा बाकी है।
(ङ) अभी भी एक बस अंतरिक्ष के पार की दुनिया से बचे हुए लोगों की खबर लाएगी।
(च) अभी भी कोई किसी को कहता है कि जल्दी आ जाओ, सूरज डूबने का समय हो चला है।

vii. चिड़िया चोंच में तिनका दबाकर उड़ने की तैयारी में क्यों है? वह तिनकों को क्या करती है? लिखें।
उत्तर - चिड़िया अपने चोंच में तिनका दबाकर उड़ने की तैयारी है क्योंकि सूरज डूबने का समय हो चुका है। सूर्य डूबने से पहले चिड़िया अपने लिए घोंसला बना लेना चाहती है। वह तिनके से अपने लिए घोंसला तैयार कर उसमें अपने बच्चों के साथ रहेगी। घोंसला उसके परिवार को सुरक्षा प्रदान करता है।

viii. कविता में कई बार 'अभी भी' का प्रयोग करके बातें रखी गई हैं, अभी भी का प्रयोग करते हुए तीन वाक्य बनायें और देखिए उनमें लगातार, निरंतर, बिना रुके चलने वाले किसी कार्य का भाव निकल रहा है या नहीं?
उत्तर - 'अभी भी' का प्रयोग करके बनाये गए तीन वाक्य -
(क) अभी भी सूरज डूबने में समय है।
(ख) कक्षा खत्म होने में अभी भी बहुत समय बाकी है।
(ग) मैं इस डॉक्टर की दवा एक महीने से खा रहा हूँ, पर अभी भी पूरी तरह ठीक नहीं हो सका हूँ।
इन वाक्यों में लगातार, निरंतर, बिना रुके चलने वाले कार्यों का भाव निकल रहा है।

Scanned with CamScanner

IX. "नहीं" और "अभी भी" को एक साथ प्रयोग करते तीन (15)
वाक्य लिखिए और देखिए की 'नहीं' 'अभी भी' के पीछे कौन-कौनसे भाव छिपे हो सकते हैं?

उत्तर - (क) नहीं, अभी भी स्कूल की छुट्टियाँ खत्म नहीं हुई हैं।

(ख) नहीं, अभी भी तुमने खाना नहीं खाया है।

(ग) इस साल समय पर वर्षा नहीं हुई है, किसान अभी भी बादलों को देख रहे हैं।

अभी भी निरंतर चलने वाली प्रक्रिया का बोध कराता है तथा नहीं से कार्य न होने का पता चलता है।

9. कबीर की साखियाँ

कबीरदास

शब्दार्थ - पूछो = पूछना, साधु = साधु, ज्ञान = जानकारी, मोल = मूल्य, आवत = आते हुए, गारी = गाली, कर = हाथ, फिरै = घूमना, माँहि = बीच में, मनुवाँ = मन, चहुँ दिसि = चारों दिशाओं में, सुमिरन = स्मरण, नींदिए = निंदा करना, पाँऊ = पैर, तलि = नीचे, उड़ि = उड़कर, मैं = मैं, खरी = पीड़ा, दुहेली = दुःख, जग = संसार, बैरी = दुश्मन, सीतल = ठंडा, आपा = अभिमान, डारि दे = त्याग दे, कोय = कोई भी।

प्रस्तुत पाठ 'कबीर की साखियाँ' भक्तिकालिन लोकप्रिय काव्य का सुंदर उदाहरण है। जिसमें कवि ने बड़े स्पष्टता से अपने विचारों को प्रकट किया है। इन साखियों में ज्ञान की महिमा, बाह्य आडंबरों का विरोध, मनुष्य को संयमपूर्ण व्यवहार करने, मन का घमंड त्यागकर शालीन व्यवहार करने पर बल दिया गया है। उन्होंने आडंबरपूर्ण भक्ति पर प्रहार करते हुए कहा है कि मन को नियंत्रण में किये बिना ईश्वर की सच्ची भक्ति नहीं की जा सकती है।

प्रस्तुत दोहा हमारी पाठ्य-पुस्तक 'वसंत भाग-3' में संकलित कबीर की साखियाँ' से लिया गया है। इसके रचयिता 'कबीरदास' हैं।

कबीरदास मनुष्य की जाति को महत्व न देकर तथा ज्ञान को ही महत्व देने के विषय में समझाते हुए कहते हैं कि मनुष्य को कभी भी साधु की जाति के विषय में जानने की इच्छा नहीं करनी चाहिए। साधु से ज्ञान अर्जन करना चाहिए, क्योंकि मनुष्य का भला साधु की जाति से नहीं बल्कि उनकी ज्ञानयुक्त बातों से होता है। वे मनुष्य

Scanned with CamScanner

को म्यान का मोलभाव न करके, तलवार का मोलभाव करने की सलाह देते हैं क्योंकि मनुष्य को तलवार से काम लेना है, म्यान तो (b) तलवार रखने के लिए होता है।

जो मनुष्य ईश्वर की भक्ति का दिखावा करता है, कवि ऐसे लोगों की आचरण पर प्रहार करते हुए कहते हैं कि भक्ति का दिखावा करने वाले लोग अपनी हाथ में राम नाम की माला फेरते हुए, जीभ से राम-राम का उच्चारण करते रहते हैं। वास्तव में वे हाथ में माला और मुँह में जीभ को फेरते रहते हैं, पर यह ईश्वर की भक्ति का आडंबर मात्र है। उनका चंचल मन तो ईश्वर पर केंद्रित होने के बजाय चारों दिशाओं में भटकता रहता है। ईश्वर पर ध्यान केंद्रित किये बिना सच्ची भक्ति संभव नहीं है।

संत कबीरदास कहते हैं कि घास या तिनके जैसी तुच्छ वस्तु को भी उपेक्षित न करने की सलाह ही हैं भले ही वह पैर के नीचे हो क्योंकि वही तिनका यदि उड़कर आँख में पड़ जाये तो दुःख दुगुना बढ़ जाता है।

कबीरदास मनुष्य को उसका घमंड त्यागने की शिक्षा देते हुए कहते हैं कि इस संसार में कोई भी मनुष्य किसी का जन्म से दुश्मन नहीं होता है। केवल मनुष्य को अपने व्यवहार और वाणी में शीतलता बनाये रखना चाहिए। जो मनुष्य अपने धन, बल, सत्ता आदि का घमंड अपने मन में नहीं रखते हैं अर्थात अपना घमंड त्यागकर दूसरों के साथ मधुर व्यवहार करते हैं, उन पर हर कोई दया करने को तैयार रहता है।

बहुविकल्पीय प्रश्न -

i. साखी के रचयिता हैं?

(a) सूरदास (b) रहीम (c) नरोत्तमदास (d) कबीरदास।

उत्तर - (d)

ii. कबीरदास ने 'साखियों' में किस छंद का प्रयोग किया है?

(a) दोहा (b) सोरठा (c) रोला (d) चौपाई।

उत्तर - (a)

iii. 'मुख माँहि' में अलंकार है -

(a) श्लेष (b) यमक (c) अनुप्रास (d) उपमा।

उत्तर - अनुप्रास (c)

iv. कबीरदास ने साखियों में क्या त्यागने का संदेश दिया है?

(a) घर (b) धन (c) राज्य (d) अभिमान।

उत्तर - (d)

Scanned with CamScanner

v. कबीरदास किस वस्तु को महत्व देनेका समर्थन करते हैं ? (17)
(क) धन (ख) ज्ञान (ग) जाति (घ) कोई भी नहीं।
उत्तर - (ख)

प्रश्नोत्तर

i. कबीर ने किस प्रकार का व्यवहार करने की शिक्षा दी है।
उत्तर - कबीर ने मनुष्य को अपने धन, बल, सत्ता आदि का व्यर्थ करके दूसरे के साथ मधुर व्यवहार करने की शिक्षा दी है।
ii. कबीर ने शांति कायम रखने का क्या उपाय बताया है।
उत्तर - कबीर कहते हैं कि जब कोई तुम्हें गाली देता है तो उसे सुन कर प्रतिक्रिया में गाली मत दो, क्योंकि इससे गालियों की संख्या बढ़ जाती है। अतः शांति स्थापित करने के लिए गाली को उलटा नहीं चाहिए।
iii. 'तलवार का महत्व होता है म्यान का नहीं' - उक्त उदाहरण से कबीर क्या कहना चाहते हैं ? स्पष्ट करें।
उत्तर - संत कबीर कहते हैं कि मानव को चाहिए की सार तत्व को ही ग्रहण करें। ऊपरी दिखावा में उलझकर नहीं रहना चाहिए। मानव के भीतर ज्ञान कितना है, यह महत्व का विषय है, यह नहीं कि किस जाति, धर्म, प्रांत का रहने वाला है।
iv. पाठ की तीसरी साखी - जिसकी एक पंक्ति है 'मनुवाँ तो चहुँदिसि फिरै, यह तो सुमिरन नाहीं' के द्वारा कबीर क्या कहना चाहते हैं ?
उत्तर - 'मनुवाँ तो चहुँ दिसि फिरै, यह तो सुमिरन नाहीं' की व्याख्या - जिस प्रकार कोई व्यक्ति हाथ में माला फेरते हुए तथा जीभ से राम नाम का उच्चारण करते हुए ईश्वर की भक्ति का आडंबर तो करता है परन्तु यह ईश्वर की सच्ची भक्ति नहीं हो सकती, क्योंकि उनका मन तो ईश्वर पर केंद्रित न होकर चारो दिशाओं में भटकता है।
v. कबीर घास की निंदा करने से क्यों मना करते हैं ? स्पष्ट कीजिए।
उत्तर - कवि ने निंदा करने के लिए इसलिए मना किया है क्योंकि निंदा करते समय व्यक्ति के गुणों पर ध्यान नहीं दिया जाता। प्रत्येक व्यक्ति में कुछ गुण भी होता है, परन्तु निंदक उनके गुणों को नहीं देख पाता है। घास से कवि का तात्पर्य समाज के उन हीन-दीन व्यक्तियों से है जिसके लिए हम समझते हैं कि वह हमारे किसी काम नहीं आ सकता है। इसलिए मानव को कभी भी दूसरे की निंदा नहीं करनी चाहिए।

Scanned with CamScanner

vi. मनुष्य के व्यवहार में ही दूसरों को विरोधी बना लेने वाले दोष होते (13)
हैं। यह भावार्थ किस दोहे से व्यक्त होता है?
उत्तर - मनुष्य के व्यवहार में ही दूसरों को विरोधी बना लेनेवाले दोष होते हैं
यह भावार्थ कबीर के पाँचवी साखी से व्यक्त होता है।—

जग में बैरी कोई नहीं, जो मन शीतल होय।
या आपा को डारि दे, दया करै सब कोय॥

10. कामचोर — इस्मत चुगताई

शब्दार्थ - दबैल = दबने वाले, हरगिज = बिलकुल, फरमान = राजा का आदेश, दुहाई = दीनतापूर्वक की जाने वाली याचना, मिसाल = हवाला = उदाहरण, याचना = विनती, तुल जाना = तत्पर होना, अट जाना = भर जाना, बेदम होना = परेशान होना, उलटे-सीधे हाथ मारना = अव्यवस्थित ढंग से काम करना, सिर पिट लेना = अफसोस करना, बुजुर्ग = उम्रदराज लोग, टूट पड़ना = झपट पड़ना, मजाल = सामर्थ्य, फौरन = तुरंत, कुमक = सेना, ठूँसम-ठास = दबा-दबा कर रखना, पीठ दिखाना = मुकाबले से भाग जाना, धींगा मुश्ती = धक्का-मुक्की, लथपथ = तरबतर, आना = छः पैसे से कुछ अधिक, कायल होना = मान लेना, ऊट-पटांग = अव्यवस्थित, कामदानी के दुपट्टे = कढ़ाईदार दुपट्टे, लुथड़े हुए = सने हुए, छापे मारना = निशान छोड़ना, मोरी = नाली, बेनकेल का ऊँट होना = बिलकुल अनियंत्रित हो जाना, लगे हाथ = इसी समय, सूप = छाजन, लश्टम-पश्टम = जल्दी-जल्दी, भेड़ चाल होना = बिना सोचे-समझे अनुसरण करना, मेंगनों = भेड़ का मल, पेट की कड़ाही में झोंकना = जल्दी-जल्दी खा लेना, बागी होना = विद्रोही हो जाना, मातम = दुःख, आँसू पोंछना = नुकसान पूरा करना, कायम = स्थिर; कोर्ट मार्शल करना = सजा सुनाना।

बहुविकल्पीय प्रश्न —

i. बच्चों को तनख्वाह देने की बात किसने कही थी?
(क) अम्मा ने (ख) अब्बा ने (ग) चच्चा ने (घ) दादी ने।
उत्तर - (ख)

ii. बच्चों को नहलाने के लिए पास के बंगलों के नौकरों को कितने पैसे प्रति बच्चा दिया गया?
(क) पाँच आना (ख) दो आना (ग) दस आना (घ) चार आना। उत्तर - (घ)

Scanned with CamScanner

iii. बच्चों के मन में किनको बंद करने का ख्याल आया ?
(क) सुर्गियों (ख) भेड़ों (ग) बकरियों (घ) भैंसों । उत्तर - (क)

iv. कौन पलँग पर मुँह ढाँके सो रही थी ?
(क) बानी दीदी (ख) मुगलानी बुआ (ग) हज्जन माँ (घ) नानी अम्मा ।
उत्तर - (ग)

v. बच्चों ने भैंस के पिछले पैर किसकी चारपाई के पायों से बाँधे थे ?
(क) मामाजी (ख) नानाजी (ग) अब्बाजी (घ) चाचा जी ।
उत्तर - (घ)

प्रश्नोत्तर -

i. कहानी में 'मोटे-मोटे' किस काम के हैं ? किनके बारे में और क्यों कहा गया है ?
उत्तर - मोटे-मोटे का अर्थ यहाँ घर के सभी बच्चों से है। बच्चे दिन भर खेलते-कूदते रहते हैं, परन्तु घर के कामों में ज़रा भी सहयोग नहीं करते हैं। उनके पिता ने फ़रमान जारी कर दिया कि अब ये बच्चे काम करेंगे ना कि आराम। उनके अनुसार आराम के कारण सब मोटे होते जा रहे थे।

ii. बच्चों के उधम मचाने के कारण घर की क्या दुर्दशा हुई ?
उत्तर - बच्चों के उधम मचाने के कारण घर की निम्न दुर्दशा हुई -
(क) घर के बर्तन इधर-उधर बिखर गये। (ख) सारे घर में मुर्गी और भेड़ इधर-उधर घूमने लगी। (ग) घर में कीचड़ था जिसके कारण दरी गंदी हो गई। (घ) जो सब्जियाँ घर में थी वे कच्ची ही भेड़ खा गई। (ङ) बच्चों को नहलाने-धुलाने के लिए पड़ोस के नौकरों को पैसे देने पड़े।

iii. "या तो बच्चा राज कायम कर लो या मुझे ही रख लो" अम्मा ने कब कहा ? तथा इसका क्या परिणाम हुआ ?
उत्तर - अम्मा ने बच्चों द्वारा की गई घर की हालत को देखकर ऐसा कहा। पिता ने बच्चों से कामचोरी निकालने की नियत से उनसे घर के काम-काज में हाथ बँटाने के लिए कहा था परन्तु उनलोगों इसके विपरीत काम कर दिया। घर की हालत बिगड़ गई, सामान बिखर गये, मुर्गियों तथा भेड़ों को घर में घुसा दिया। जिसका परिणाम यह हुआ कि काम करने के बजाय और परेशानी बढ़ गई, जिसे देखकर अम्मा परेशान हो गई तथा पिता जी से साफ़ कह दिया कि या तो बच्चों से काम करवा लो या मैं मायके चली जाती हूँ। इसका परिणाम यह हुआ कि पिता ने बच्चों को घर की किसी भी चीज को बच्चों को हाथ लगाने की हिदायत दे डाली नहीं तो सज़ा के लिए तैयार रहने को कहा।

Scanned with CamScanner

iv. 'कामचोर' कहानी क्या संदेश देती है ?

उत्तर - 'कामचोर' कहानी से यही संदेश मिलता है कि काम के लिए समझदारी रखना आवश्यक है। बिना सोचे-समझे किया गया काम हमेशा नुकसान ही देता है।

v. क्या बच्चों ने उचित निर्णय लिया कि अब चाहे कुछ भी हो जाये, हलकर पानी भी नहीं पियेंगे ?

उत्तर - बच्चों द्वारा लिया गया निर्णय बिलकुल उचित नहीं था। इस से बच्चों में कामचोरी एवं आलस की प्रवृत्ति बढ़ती है। कामचोरी की यह बढ़ती प्रवृत्ति न उनके लिए ठीक है, न माँ-बाप के लिए और न ही समाज के लिए। इससे वे घर-परिवार तथा समाज पर बोझ बन जाएँगे।

vi. तरकारीवाली मातम क्यों मना रही थी ? उसके आँसू कैसे पोंछे गये ?

उत्तर - उसकी सारी तरकारी भेड़ों ने खा ली थी जिस कारण वह मातम मना रही थी। अम्मा ने उसका नुकसान पूरा करके उसके आँसू पोंछे।

vii. बच्चों ने तनख्वाह के लालच में पहला काम क्या किया तथा इससे घर की क्या दशा हुई ?

उत्तर - बच्चों ने तनख्वाह के लालच में पहला काम दरी साफ करने का किया। बहुत से बच्चे फर्श की दरी पर गुट गये और चारों तरफ से झटकना शुरू किया। दो-चार बच्चों ने लकड़ियाँ लेकर धुआँधार पिटाई शुरू कर दी जिस कारण सारा घर धूल से भर गया तथा सभी सदस्य खाँसते-खाँसते बेदम हो गये।

viii. बच्चों ने भैंस पर काबू पाने के लिए क्या करने का सोचा ?

उत्तर - बच्चों ने भैंस को काबू में लाने के लिए उसके पैरों को बाँधने की सोची। उन्होंने झूले की रस्सी से भैंस के पिछले पैर को चाचा जी की चारपाई के पायों में बाँध दी, परन्तु अगले पैरों को बाँधते समय भैंस चौकन्नी हो गई।

ix. अंत में अब्बा जी ने क्या किया ?

उत्तर - अंत में अब्बा जी सबको पंक्ति में खड़ा करके पूरी बटालियन का कोर्ट मार्शल कर दिया और कहा कि अगर किसी बच्चे ने भी घर की किसी चीज को हाथ लगाया तो रात का खाना उनको नहीं दिया जाएगा।

Scanned with CamScanner

वर्ग 8
हिन्दी
वसंत भाग 3

पाठ - 11

जब सिनेमा ने बोलना सीखा

(प्रदीप तिवारी)

शब्दार्थ - सवाक् = बोलती, मूक = जो बोल न सके, दौर = समय, पटकथा - फिल्म के लिए लिखी कहानी, पार्श्वगायक = पर्दे के पीछे से गाने वाले, डिस्क फॉर्म = रिकार्डिंग का एक रूप, प्रणाली = विधि, संयोजन = मिलाने की प्रक्रिया, स्टंटमैन = जोखिम भरे दृश्यों को स्वयं करने वाला, खिताब = उपाधि, प्रतिमा = विलक्षण बौद्धिक शक्ति, कद्र = महत्त्व, मान।

प्रश्नोत्तर -

i. जब पहली बोलती फिल्म प्रदर्शित हुई तो उसके पोस्टरों पर कौन सा वाक्य छापे गये? उस फिल्म में कितने चेहरे थे? लिखे।
उत्तर - देश की पहली बोलती फिल्म के विज्ञापन के लिए छापे गये वाक्य निम्न प्रकार थे - "वे सभी सजीव हैं, सांस ले रहे हैं, शत-प्रतिशत बोल रहे हैं, अठहत्तर मुर्दा इंसान जिंदा हो गये, उनको बोलते, बातें करते देखो।" पाठ के आधार पर 'आलम आरा' में कुल मिलाकर 78 चेहरे थे। परन्तु इसमें कुछ मुख्य कलाकार नायिका जुबैदा, नायक विट्ठल, सोहराब मोदी, पृथ्वीराज कपूर, याकूब और जगदीश सेठी जैसे लोग भी मौजूद थे।

ii. पहला बोलता सिनेमा बनाने के लिए फिल्मकार अर्देशिर एम० ईरानी को प्रेरणा कहाँ से मिली? उन्होंने आलम आरा फिल्म के लिए आधार कहाँ से लिया? विचार प्रकट कीजिए।
उत्तर - फिल्मकार अर्देशिर एम० ईरानी ने सन् 1929 ई० में हॉलीवुड की एक बोलती फिल्म 'शो बोट' देखी तभी उनके मन में बोलती फिल्म बनाने की इच्छा जगी। उन्होंने पारसी रंगमंच के एक लोकप्रिय नाटक को फिर 'आलम आरा' को फिर आधार बनाकर अपनी फिल्म की पटकथा बनायी।

iii. विट्ठल का चयन आलम आरा फिल्म के नायक के रूप में हुआ लेकिन उन्हें क्यों हटाया गया? विट्ठल ने पुन: नायक होने के लिए क्या किया? विचार दीजिए।
उत्तर - विट्ठल का चयन 'आलम आरा' फिल्म के नायक के रूप में हुआ परन्तु उसे हटाया गया क्योंकि उन्हें उर्दू बोलने में कठिनाई होती थी। विट्ठल ने पुन: उस सवाक् फिल्म आलम

आरा से नायक बनने के लिए मुकदमा कर दिया। उनका मुकदमा वकील मो० अली जिन्ना ने लड़ा। जो अपने समय के सुप्रसिद्ध वकील थे। विट्ठल मुकदमा जीत गये तथा पुन नायक बने।

iv. पहली सवाक् फिल्म के निर्माता - निर्देशक अर्देशिर को जब सम्मानित किया गया तब सम्मानकर्ताओं ने उनके लिए क्या कहा था? अर्देशिर ने क्या कहा? इस प्रसंग में लेखक ने क्या टिप्पणी की है? लिखें।

उत्तर - पहली फिल्म के निर्माता - निर्देशक अर्देशिर को फिल्म के प्रदर्शन के पच्चीस वर्ष पूरे होने पर सम्मानित किया गया और उन्हें "भारतीय सवाक् फिल्मों के पिता" कहा गया तो उन्होंने उस मौके पर कहा था - "मुझे इतना बड़ा खिताब देने की जरूरत नहीं है। मैंने तो देश के लिए अपने हिस्से का जरूरी योगदान दिया है।" वे विनम्र स्वभाव के व्यक्ति थे, जिनसे एक नया युग शुरू हो गया।

भाषा की बात -

i. सवाक् शब्द वाक् के पहले 'स' लगाने से बना है। स उपसर्ग से कई शब्द बनते हैं। निम्नलिखित शब्दों के साथ स का उपसर्ग की भाँति प्रयोग करके शब्द बनाइए और शब्दार्थ में होने वाले परिवर्तन को बताएँ। हित, परिवार, विनय, चित्र, बल, सम्मान।

उत्तर -

उपसर्ग	शब्द	अर्थ	उपसर्ग सहित शब्द	उनके अर्थ
स	- हित	- भलाई	- सहित	- के साथ, युक्त
स	- परिवार	- घर के सदस्यों का समूह	- सपरिवार	- परिवार के साथ
स	- विनय	- प्रार्थना	- सविनय	- विनम्रतापूर्वक,
स	- चित्र	- तस्वीर	- सचित्र	- चित्र सहित
स	- बल	- ताकत	- सबल	- बलवान
स	- सम्मान	- आदर	- ससम्मान	- आदरपूर्वक

ii. उपसर्ग और प्रत्यय दोनों ही शब्दांश होते हैं। वाक्य में इस का प्रयोग अकेला नहीं हो सकता। इन दोनों में अंतर केवल इतना ही है कि उपसर्ग किसी शब्द के पहले तथा प्रत्यय बाद में

Scanned with CamScanner

लगाता है। पाठ में आये उपसर्ग एवं प्रत्यय युक्त शब्दों के कुछ उदाहरण नीचे दिये जा रहे हैं –

मूल शब्द	उपसर्ग	प्रत्यय	शब्द
वाक्	स	–	सवाक्
लोचना	सु	–	सुलोचना
फ़िल्म	–	कार	फ़िल्मकार
कामयाब	–	ई	कामयाबी

इस प्रकार के 15-15 उदाहरण दीजिए।

उत्तर - उपसर्ग निर्मित शब्द -

शब्द	उपसर्ग	शब्द	उपसर्ग
सजीव	- स	प्रतिशत	- प्र
विज्ञापन	- वि	प्रदर्शित	- प्र
विभिन्न	- वि	संवाद	- सम्
संगीत	- सम्	व्यवस्था	- वि
संयोजन	- सम्	बतौर	- ब
सक्रिय	- स	अभिनेता	- अभि
नियंत्रण	- नि	सम्मानित	- सम्
प्रचलित	- प्र		

प्रत्यय निर्मित शब्द –

शब्द	प्रत्यय	शब्द	प्रत्यय
ऐतिहासिक	- इक	भारतीय	- ईय
प्रदर्शित	- इत	फिल्मकार	- कार
संगीतकार	- कार	अधिकतर	- तर
जरूरी	- ई	हिन्दुस्तानी	- ई
नायिका	- इका	पारिश्रमिक	- इक
कामयाबी	- ई	पहलवान	- वान
प्रकार	- कार	पौराणिक	- इक
सामाजिक	- इक		

Scanned with CamScanner

बहुविकल्पीय प्रश्न -

i. पहली बोलती फिल्म थी -
(क) मुगल-ए आजम (ख) दोस्ती (ग) पूरब और पश्चिम
(घ) आलम आरा । उत्तर - (घ)

ii. आलम आरा फिल्म कब प्रदर्शित हुई ?
(क) 14 मार्च, 1931 ई० (ख) 14 मार्च 1930 ई० (ग) 14 अप्रैल 1931
(घ) 14 मई सन् 1929 ई० । उत्तर - (क)

iii. आलम आरा फिल्म मुम्बई के किस सिनेमाघर में प्रदर्शित हुई
(क) माया (ख) राजमंदिर (ग) मैजेस्टिक (घ) इनमें से कोई नहीं।
उत्तर - (ग)

iv. "भारतीय सवाक् फिल्मों के पिता" किसे कहा गया ?
(क) दादा साहब फाल्के (ख) अर्देशिर एम० ईरानी ।
(ग) पृथ्वीराज कपूर (घ) सोहराब मोदी । उत्तर - (ख)

v. किस फिल्म में नायिका सुलोचना की हेयर स्टाइल उस दौर में औरतों में लोकप्रिय थी ?
(क) खुदा की शान (ख) आलम आरा (ग) माधुरी
(घ) मुगल-ए-आजम । उत्तर - (ग)

12. सुदामा चरित्र

(नरोत्तम दास)

शब्दार्थ - सीस = सिर, पगा = पगड़ी, झँगा = वस्त्र, आहि = आया, केहि = कौन सा, लटी = फटी, अरु = और, पाँय = पाँव, उपानह = पनही या जूती, सामा = निशान, द्विज = ब्राह्मण, चकिसों = हैरान होकर, अभिरामा = सुंदर, धाम = भवन, बतावत = बताता है।

प्रस्तुत पद्यांश हमारी पाठ्य-पुस्तक 'वसंत भाग-3' में संकलित कविता 'सुदामा चरित' से लिया गया है। इसके रचयिता नरोत्तमदास जी हैं।

व्याख्या - जिसके सिर पर पगड़ी नहीं है, शरीर पर कुर्ता नहीं है। न जाने कहां से आये किस गाँव में रहते हैं। द्वार पर एक दुबले-पतले शरीर वाला ब्राह्मण खड़ा है, वह फटी हुई धोती तथा गंदा दुपट्टा पहने हैं तथा उसके पैरों में जूते नहीं हैं जो आश्चर्य से द्वारिकापुरी की धरती की दिव्यता को देखकर हैरान हो रहा है। वह दीन दयाल भगवान कृष्ण का महल पूछ रहा है तथा अपना नाम सुदामा बता रहा है।

शब्दार्थ - बेहाल = पीड़ित, पग = कदम, कंटक = काँटे, जाल = समूह, पुनि = पुनः, इतै = इतने, कितै = कितना, दसा = हालत।

कृष्ण ने सुदामा को सिंहासन पर बैठाया और उनके पैरों को धोने के लिए परात में पानी भर लाये। उसने सुदामा के पैरों को धोना चाहा तो देखा कि उनके पैरों में बेवाइयाँ फटी हुई हैं, जिनसे सुदामा को अत्यंत पीड़ा हो रही थी, पैरों में जगह-जगह काँटे चुभे हैं। ऐसा लगता है मानो जैसे पैर में काँटों का जाल बिछा है। उनकी यह दशा देखकर कृष्ण अत्यंत दुःखी हो जाते हैं तथा उससे कहते हैं कि, "हे मित्र इधर अबतक क्यों नहीं आये? अबतक कहाँ दुःख भोगते रहे। सुदामा की ऐसी कष्टकारी दशा देखकर श्री कृष्ण रो पड़ते हैं। श्री कृष्ण को रोने से उनके आँखों से इतने आँसू गिरे कि सुदामा के पैरों को धोने के लिए उन्हें परात के पानी को हाथ नहीं लगाना पड़ा।

शब्दार्थ - कछु = कुछ चीज, काहे = क्यों, चाँपि = दबाना, पोटरी = गठरी, दए = दिये, तै = उनको, चाबि = चबाना, दीने = दिये,

बान = आहंत, प्रवीने = कुशल, भीने = गीले, अजौं = अब भी, (26)
तजो = त्यागना, तैसई = उसी प्रकार, तंदुल = चावल, कीन्हे = किए,
श्री कृष्ण ने सुदामा से पूछा कि भाभी ने मेरे लिए कुछ उपहार भेजी है, वह मुझे तुम क्यों नहीं दे रहे हो? किस लिए उस गठरी को अपनी काँख में छिपाकर रखे हो?

पहले भी गुरुमाता ने हम दोनों के लिए जो चना दिये थे तो उस चने को तुम स्वयं ही खा गये। श्री कृष्ण मुस्कुराते हुए कहते हैं कि तुम चोरी के आदत में पहले से ही निपुण हो। भाभी द्वारा दिया गया उपहार अभी भी अपनी काँख में छिपाये बैठे हो। अभी तुम्हारी चोरी की आदत गई नहीं है।

शब्दार्थ - पुलकनि = प्रसन्न होकर, पठवनि = विदाई करना, नाही हुतै = नहीं था, वाही = वही, पठयो = भेजा, तनक = थोड़ी सी, काज = कारण, कहिहौं = कहूँगा, धरौ = रखना, सकेलि = सँभालकर।

श्री कृष्ण ने सुदामा को जब विदा किया तो उसने सुदामा को कुछ नहीं दिया। इसलिए सुदामा के मन में दुःख था।

सुदामा मन ही मन कहते हैं कि यदि पत्नी ने मुझे भेजा नहीं होता तो मैं आता ही नहीं। ये वही कृष्ण हैं जो थोड़ा सा मक्खन, दही के लिए हर एक के घर चोरी करते फिरते थे, तो ऐसे मित्र से क्या उम्मीद की जा सकती है। आज बदले समय में श्री कृष्ण द्वारिका के राजा हैं तो क्या हुआ? हैं तो वही कृष्ण जो बचपन में चोरी करते थे। वे अपनी पत्नी पर गुस्सा करते हुए कहते हैं कि अब पहुँचकर उनसे कहूँगा कि कृष्ण ने जो धन दिया है, उसे संभाल कर रख लो।

शब्दार्थ - वैसोई = वैसा ही, गज - बाजि = हाथी - घोड़े, घने = अधिक, संभ्रम = संशय, कैधों = या तो, कहुँ = कहीं, मारग = रास्ता, फैरि कै = वापस आकर, भौन = मकान, बिलोकिबे = देखने के लिए, लोचत = लालायित होना, मसायो = खूब खोजा।

जब सुदामा द्वारिका से खाली हाथ लौट आते हैं तो आकर संशय में पड़ जाते हैं, गाँव में जिस स्थान पर झोपड़ी थी वहाँ बड़ा महल तैयार था। महल के आसपास द्वारिका की तरह हाथी-घोड़े विराजमान थे। वे सोचने

लगे कि कहीं ऐसा तो नहीं कि मैं भूलकर फिर द्वारिका ही पहुँच गया। मेरा मन यह कह रहा है कि इन भवनों को देखता ही रहूँ, यह सब सोचते हुए वे सारे गाँव में घूमते रहे। सुदामा सब से पूछते फिर रहे थे, परन्तु वे अपनी झोपड़ी को कहीं खोज नहीं सके।

शब्दार्थ - कै = कहाँ तो, हतो = हुआ करती थी, धाम = महल, सुहावत = सुंदर लगाते हैं, कटै = बीतना, परताप ते = कृपा से, दाख = अंगूर, भावत = अच्छा लगाना।

प्रभु की कृपा से पूर्व सुदामा की दशा इतनी दयनीय थी कि टूटी-सी झोपड़ी में सुदामा निवास करते थे, लेकिन अब उनको सोने का महल प्राप्त है। जिनके पैरों में जूती नहीं होते थे अब उसके लिए महावत हाथी लेकर द्वार पर खड़े रहते हैं, पहले जिस कठोर भूमि पर नींद आती थी, अब कोमल सेज पर नींद नहीं आ रही हैं, पहले जिसे मोटा अनाज - कोदो, सवाँ भी नहीं मिलता था, आज उसे अंगूर भी अच्छा नहीं लग रहा है।

प्रश्नोत्तर -

1. सुदामा की दीन दशा देखकर श्री कृष्ण की क्या मनोदशा हुई? अपने शब्दों में लिखिए।

उत्तर - सुदामा की दीन दशा देखकर श्री कृष्ण की व्याकुलता बढ़ गई। उनकी दशा देखकर श्री कृष्ण का हृदय इतना द्रवित हो गया कि उनके नेत्रों से इतने आँसू बहे कि सुदामा के पैर श्री कृष्ण के आँसू से ही धुल गये।

2. "पानी परात को हुयो नहिं, नैनन के जल सो पग धोए।" पंक्ति में वर्णित भाव का वर्णन अपने शब्दों में कीजिए।

उत्तर - "पानी परात को ... पग धोए।" पंक्ति के अनुसार सुदामा की घोर गरीबी और पैरों की दशा देखकर श्री कृष्ण का मन रो उठा। वे सोचने कि वे स्वयं द्वारिका के राजा हैं और वैभवशाली तथा ऐशो आराम का जीवन बीता रहे हैं, किंतु उनका ही मित्र सुदामा घोर गरीबी में जीवन बीता रहे हैं। यह सब देख एवं सोचकर उनकी आँखों से आँसू गिरने लगते हैं तथा उन्हीं आँसू से सुदामा का पैर धो डालते हैं।

Scanned with CamScanner

iii. "चोरी की बान में हौ जू प्रवीने।"

(क) उपर्युक्त पंक्ति कौन किससे कह रहा है?

उत्तर - उपर्युक्त पंक्ति श्री कृष्ण अपने मित्र सुदामा से कह रहे हैं।

(ख) इस कथन की पृष्ठभूमि स्पष्ट कीजिए।

उत्तर - इस कथन की पृष्ठभूमि - गरीब सुदामा कृष्ण के पास कुछ आर्थिक मदद की आशा लेकर गये थे, जाते समय उनकी पत्नी ने श्री कृष्ण को उपहार स्वरुप कुछ चावल दी थी। श्री कृष्ण द्वारिका के राजा थे। वे नाना प्रकार के स्वादिष्ट व्यंजन खाया करते थे। सुदामा सोच रहे थे कि ऐसे राजा को यह चावल कैसे भेंट करुँ। इसी द्वन्द्व में फँसे सुदामा उस चावल की पोटली को दबाकर छिपाने का प्रयास कर रहे थे। यह देखकर श्री कृष्ण ने ऐसा कहा था।

(ग) इस उपालंभ के पीछे कौन सी पौराणिक कथा है?

उत्तर - बचपन में श्री कृष्ण और सुदामा दोनों संदीपनि के आश्रम में शिक्षा ग्रहण कर रहे थे। ईंधन हेतु गुरुमाता ने दोनों को जंगल से लकड़ी लाने के लिए भेजा। नास्ता के लिए उन्होंने सुदामा को चने की एक पोटली भेंट करते हुए बोली कि भूख लगने पर दोनों खा लेना। श्री कृष्ण जंगल में पेड़ पर लकड़ियाँ काटने लगे। इसी क्रम में मौसम खराब हो गया तथा वर्षा होने लगी। हवा बहने से ठंड बढ़ गई, कृष्ण पेड़ पर ही थे। नीचे सुदामा के पास जो चना था उसे चबाने लगे। चने चबाने की आवाज सुनकर श्री कृष्ण ने सुदामा से पूछा कि मित्र क्या खा रहे हो? सुदामा ने जबाब दिया सर्दी के कारण दाँत किटकिटा रहे हैं। इस प्रकार सुदामा श्री कृष्ण से चोरी-चोरी चना खा गये।

पुन: जब सुदामा अपनी पत्नी द्वारा दिये गये चावलों की पोटली को दबाने का प्रयास कर रहे थे, तब श्री कृष्ण ने उसी बचपन की घटना की याद दिलाते हुए कहा - "चोरी की बान में हौ जू प्रवीने"

iv. द्वारिका से खाली हाथ लौटते समय सुदामा मार्ग में क्या

सोचते जा रहे थे ? वे श्री कृष्ण के व्यवहार से क्यों खीझ रहे थे ? सुदामा के मन की दुविधा को स्पष्ट कीजिए। (29)

उत्तर - द्वारिका से खाली हाथ लौटते समय सुदामा अत्यंत दुःखी थे। वे कृष्ण द्वारा अपने प्रति किये गये व्यवहार के बारे में सोच रहे थे। वे सोच रहे थे कि जब मैं कृष्ण के पास गया तो उसने मेरा आतिथ्य-सत्कार किया, क्या यह सब दिखावटी था ? वे श्री कृष्ण के व्यवहार से इस लिए खीझ रहे थे कि केवल आदर-सत्कार करके ही कृष्ण ने सुदामा को खाली हाथ भेज दिया। वे तो कृष्ण के पास जाना ही नहीं चाहते थे, परन्तु उनकी पत्नी ने उन्हें भेज दिया। उन्हें इस बात का अफसोस हो रहा था कि माँगे हुए चावल भी हाथ से निकल गये और कृष्ण ने कुछ दिया भी नहीं।

v. अपने गाँव लौटकर जब सुदामा अपनी झोपड़ी नहीं खोज पाये तब उनके मन में क्या विचार आये ? स्पष्ट करें।

उत्तर - अपने गाँव लौटकर जब सुदामा अपनी झोपड़ी नहीं खोज पाये तो उनके मन में यह विचार आया कि मैं रास्ता भूलकर पुनः द्वारिका पहुँच गया हूँ। यह गाँव मेरा नहीं हो सकता, क्योंकि उस गाँव में तो मेरी एक छोटी सी झोपड़ी थी, यह तो सोने का महल दिखाई दे रहा है। लगता है किसी ने मेरी जमीन पर अपना अधिकार कर लिया तथा उस जगह पर सोने का महल खड़ा कर दिया। मेरी पत्नी भी यहाँ नहीं दिखाई दे रही है, विपत्ति की मारी वह न जाने कहाँ मिलेगी।

vi. निर्धनता के बाद मिलने वाली संपन्नता का चित्रण कविता की अंतिम पंक्तियों में वर्णित है। उसे अपने शब्दों में लिखें।

उत्तर - अत्यंत गरीबी में दिन बिताने वाले सुदामा के दिन यदि फिर

आएँगे, स्वयं सुदामा को भी इसकी आशा न थी। सुदामा द्वारिका जाने से पहले एक झोपड़ी में रहते थे। प्रभु की कृपा से अब वे एक सोने के महल में रह रहे हैं। उनके पैरों में जूते नहीं थे लेकिन आज उनकी प्रतीक्षा में मखमल बिछी हुई है। सुदामा को पहले जमीन पर सोना पड़ता था, लेकिन अब उनको मखमली सेज पर भी नींद नहीं आ रही है। एक समय था कि उनको मोटे अनाज खाने को नहीं मिलते थे, लेकिन आज उनको अंगूर भी नहीं भा रहे हैं।

बहुविकल्पीय प्रश्न –

i. सुदामा की पत्नी ने उन्हें किसके पास भेजा ?
(क) गुरु संदीपन (ख) श्री कृष्ण (ग) जरासंध (घ) बलराम।
उत्तर - (ख)

ii. सुदामा की पत्नी ने पोटली में क्या दिया ?
(क) गेहूँ (ख) लड्डू (ग) चावल (घ) चना। उत्तर - (ग)

iii. श्री कृष्ण ने सुदामा के पैर किससे धोए ?
(क) जल (ख) दूध (ग) पंचामृत (घ) आँसू। उत्तर - (घ)

iv. सुदामा, श्री कृष्ण से मिलने कहाँ गये ?
(क) द्वारिका (ख) मथुरा (ग) गोकुल (घ) हस्तिनापुर।
उत्तर - (क)

v. श्री कृष्ण ने किसे कहा कि तुम चोरी करने में पहले से ही प्रवीण हो ?
(क) दुर्योधन (ख) अर्जुन (ग) बलराम (घ) सुदामा।
उत्तर - (घ)

Scanned with CamScanner

13. जहाँ पहिया है

(पी० साईनाथ)

शब्दार्थ – आम = सामान्य, अभिव्यक्त = प्रकट करना, प्रदर्शन = दिखावा, प्रतियोगिता = स्पर्धा, कौशल = कला, फब्ती कसना – व्यंग्यपूर्ण बातें, चाव = रुचि, हैसियत = सामर्थ्य, तराशना = काटना, इस्तेमाल = प्रयोग, यकीन = विश्वास, आवेग = उत्तेजना, दायरा = सीमा, प्रोत्साहन = उत्साहवर्धन, हक्का-बक्का होना = आश्चर्य में पड़ना, राय = विचार, आँकड़े = संख्या, सतर्कता = सावधानी, निहितार्थ = छिपा हुआ अर्थ, वजह = कारण, पहलुओं = अवधारणा।

प्रश्नोत्तर –

i. "उन जंजीरों को तोड़ने का जिनमें वे जकड़े हुए हैं, कोई-कोई तरीका लोग निकाल ही लेते हैं – " आपके विचार से लेखक जंजीर द्वारा किन समस्याओं की ओर इशारा कर रहा है।

उत्तर – हमारे समाज में कई ऐसी समस्याएँ हैं, जैसे – पुरानी रूढ़िवादी विचारधारा एक सबसे बड़ी समस्या है। हमारा समाज पुरुष प्रधान है। निरक्षरता, जिसके कारण कोई स्वतंत्र निर्णय नहीं ले सकती है। महिलाओं के प्रति भेदभाव, जिनके प्रति लेखक जनता को जाग्रत करना चाहता है।

ii. क्या आप लेखक की इस बात से सहमत हैं? अपने उत्तर का कारण भी बताइए।

उत्तर – लेखक के इस बात से हम सहमत हैं। समाज द्वारा बनायी गई रूढ़ियाँ अपनी सीमाओं को लाँघने लगे तो समाज में इसके विरुद्ध एक क्रांति जन्म लेती है। जो इन रूढ़ियों के बंधनों को तोड़ डालती है। समय के साथ-साथ विचारों में भी परिवर्तन होता है, अन्यथा हम कभी प्रगति नहीं कर पायेंगे। जब परिवर्तन होता है तो एक नये समाज का जन्म होता है। पहले तो यह परिवर्तन समाज के लिए असहनीय होता है, लेकिन धीरे-धीरे समाज उस परिवर्तन को स्वीकार कर लेता है तथा समाज पुरानी जंजीरों को तोड़कर एक नये रूप में विद्यमान हो जाता है।

iii. प्रारंभ में इस आंदोलन को चलाने में कौन सी बाधा आई?

उत्तर – प्रारंभ में इस आंदोलन को चलाने में सबसे बड़ी बाधा यह आई कि पुरुष प्रधान समाज ने इसे अच्छा नहीं समझा।

Scanned with CamScanner

मुस्लिम समाज रूढ़िवादी होने के कारण अनुमति नहीं देता था कि नारी साइकिल से सड़क पर चले। आर्थिक संकट के कारण नारियों को साइकिल खरीदने में कठिनाई आयी, उन्हें किराये पर साइकिल लेनी पड़ी।

iii. आपके विचार से लेखक ने इस पाठ का नाम 'पहिया' क्यों रखा होगा?

उत्तर - 'जहाँ पहिया है' लेखक ने तमिलनाडु के पुडुकोट्टई गाँव के साइकिल आंदोलन के कारण ही इसका नाम रखा है। यह नाम इस आंदोलन को अपना समर्थन देने हेतु ही रखा गया है। वहाँ की महिलाओं द्वारा अपने अधिकारों व स्वतंत्रता हेतु साइकिल आन्दोलन का आरंभ, वहाँ की औरतों को जाग्रत करने का प्रयास था। साइकिल को अपनी जागृति के लिए चुनना बहुत बड़ा कदम था इसलिए यह नाम औरतों के इस नवजागरण के प्रति रखा गया होगा।

iv. नव साक्षर महिला ने 'जहाँ पहिया है' पाठ के लेखक को क्या बताया है?

उत्तर - एक नवसाक्षर महिला ने लेखक को बताया कि साइकिल चलाने का उसकी व्यक्तिगत आजादी से सीधा संबंध है।

बहुविकल्पीय प्रश्न -

i. पुडुकोट्टई किस राज्य में स्थित है।

(क) उत्तर प्रदेश (ख) केरल (ग) तमिलनाडु (घ) सिक्किम।

उत्तर - (ग)

ii. कितनी महिलाओं ने 'प्रदर्शन एवं प्रतियोगिता' जैसे सार्वजनिक कार्यक्रमों में भाग लिया?

(क) दस हजार (ख) पचास हजार (ग) बीस हजार (घ) सत्तर हजार।

उत्तर (घ)

iii. कुंदिमि अन्नामलाई की चिलचिलाती धूप में किसे साइकिल सिखलाते देखना अद्भुत दृश्य था?

(क) फातिमा (ख) मनोरमनी (ग) जमीला (घ) अक्कनी। उत्तर - (ख)

iv. किस साइकिल डीलर ने महिलाओं का पक्ष लिया?

(क) आर० साइकिल्स (ख) रामा साइकिल्स (ग) हिन्दुस्तान साइकिल्स (घ) नवभारत साइकिल्स। उत्तर - (क)

Scanned with CamScanner

14. अकबरी लोटा

(अन्नपूर्णानंद वर्मा)

शब्दार्थ - विपदा = मुसिबत, खुफस = जिसके पास कुछ न हो, हेकड़ी से हाथ धोना = प्रतिष्ठा धीरे हो जाना, डामलफांसी देना = उम्रकैद, मरोड़ = ऐंठन, उधेड़-बुन = उलझन, बदन = बनावट, अदब = लिहाज, गनीमत = संतोष, चूँ करना = जरा सा विरोध करना, उल्का = टूटता तारा, ओझल = अदृश्य होना, खुराफाती शरारत ईजाद = खोज, सायबान = छज्जा, साँगोपांग = पूरीतरह, प्रकांड = बहुत अधिक, शख्स = व्यक्ति, निरीह = सरल, विज्ञ = विशेष ज्ञानी, वजू = नमाज पढ़ने के पहले हाथ पैर धोना, शाही = राज, भुरता करना = कुचलना, ताव आना = जोश में आ जाना, आशाओं की लाश उठाना = अत्यंत निराश होना, प्रसन्नता की कूँची गिरना = खुशी दिखाई पड़ना, कान पकना = परेशान होना, होड़ = मुकाबला, जतन = प्रयास, बिल्लौर = पत्थर का बना, पारसाल = पिछले साल, पुश्त = पीढ़ी, चैन की नींद सोना = निश्चिंतता पूर्वक सोना, सहेजना = सावधानी से रखना।

प्रश्नोत्तर —

i "लाला ने लोटा ले लिया, बोले कुछ नहीं, अपनी पत्नी का अदब मानते थे।" लाला झाऊलाल को बेढंगा लोटा बिल्कुल पसंद नहीं था। फिर भी उन्होंने चुपचाप लोटा ले लिया। आपके विचार से वे चुप क्यों रहे? अपने विचार लिखिए।

उत्तर - लाला झाऊलाल को लोटा पसंद नहीं रहते हुए चुप उसे ले लिया क्योंकि वे अपनी पत्नी का अदब मानते थे। इसके अतिरिक्त उन्होंने सोचा कि अभी तो लोटे में पानी मिला है यदि चूँ कर दूँ तो कहीं बाल्टी में भोजन न करना पड़े। यही सोचकर उन्होंने चुप रहना ही बेहतर समझा।

ii "लाला झाऊलाल ने तुरंत दो और दो जोड़कर स्थिति को समझ लिया।" आपके विचार से लाला झाऊलाल ने कौन-कौन सी बातें समझ ली होंगी?

उत्तर - मेरे विचार से लाला झाऊलाल ने निम्न बातें समझ ली होंगी —(i) मेरे सिर से पाँव तक भीगे और एक पैर को सहलाते अंग्रेज के हाथ में अपना लोटा देखकर झाऊलाल समझ गये कि उनके लोटे से अंग्रेज को चोट लगा रहे है। अब वह अंग्रेज गाली

देकर झगड़ा जरूर करेगा। उस अंग्रेज के साथ आसपास के लोग भी आएँगे तथा तरह-तरह की बातें करेंगे। उनके और अंग्रेज के बीच होने वाले झगड़े में लोग रस लेने की कोशिश करेंगे।

iii. अंग्रेज के सामने बिलवासी जी ने झाड़ूलाल को पहचानने से क्यों इनकार कर दिया था? आपके विचार से बिलवासी जी ऐसा अजीब व्यवहार क्यों कर रहे थे। स्पष्ट कीजिए।

उत्तर - पानी से भीगे अंग्रेज के सामने बिलवासी जी झाड़ूलाल को पहचानने से इनकार कर दिया क्योंकि वे अपनी योजना पूरी करना चाहते थे, जिससे पैसे की व्यवस्था हो सके तथा आर्थिक समस्या का समाधान हो जाये। यदि वे लालाजी को पहचानते तो योजना विफल हो जाती। बिलवासी ऐसा व्यवहार इस लिए कर रहे थे कि उनकी पत्नी को इसकी भनक न लगे तथा अंग्रेज को यह पता न चले कि वे लालाजी के ही आदमी हैं।

iv. बिलवासी जी ने रुपयों का प्रबंध कहाँ से किया था? लिखिए।

उत्तर - बिलवासी जी ने रुपयों का प्रबंध अपनी पत्नी के संदूक से लाकर किया था। उन्होंने यह काम इतनी सफाई से किया था ताकि उनकी पत्नी को इस बात का पता न लगे।

v. आपके विचार से अंग्रेज ने यह पुराना लोटा क्यों खरीदा? इसका कारण लिखिए।

उत्तर - अंग्रेज ने यह पुराना लोटा खरीदा क्योंकि उसके पड़ोसी मेजर डगलस से पुरानी चीजों के संग्रह करने में उसकी होड़ लगी रहती थी। गत वर्ष हिंदुस्तान आने पर वे वहाँ से जहाँगीरी अंडा लेकर गये थे। अब यह अंग्रेज अकबरी लोटे को खरीदकर उन्हें यह दिखाना चाहता था कि वह भी हिन्दुस्तान से अच्छी चीजें ला सकता है। यह अकबरी लोटा उस जहाँगीरी अंडे से एक पुश्त पुराना था। इसके अलावा उस लोटे का मूल्य भी अधिक था, इस लिए इसका महत्व अधिक होता, वह मेजर डगलस से स्पर्धा में आगे रहना चाहता था।

भाषा की बात —

i. इस कहानी में लेखक ने जगह-जगह पर सीधी-सी बात कहने के बदले रोचक मुहावरों, उदाहरणों आदि द्वारा कहकर अपनी बात

को और अधिक मजेदार। रोचक बना दिया है। कहानी से वाक्य (35)
चुनकर लिखें जो आपको सबसे अधिक मजेदार लगती हों ?
उत्तर - मजेदार वाक्य निम्न प्रकार हैं -
(i) "अजी हटो, ढाई सौ रुपये के लिए अपने भाई से भीख मांगोगे
मुझसे ले लेना।" (ii) कुछ ऐसी गरदन लोटे की थी कि उसका
बाप डमरु, माँ चिलम रही हो। (iii) कल ढाई सौ रुपये या
तो गिन देना है या सारी हेकड़ी से हाथ धोना है। (iv) लोटे
ने दायें देखा न बाँये, वह नीचे गली की ओर चल पड़ा। अपने
वेग से उलका को लजाता हुआ वह आँखों से ओझल हो गया।
(v) यह लोटा न जाने किस अनाधिकारी के सिर पर काँसे
वास का संदेश लेकर पहुँचेगा। (vi) यह वह विश्व प्रसिद्ध
लोटा है जिसकी तलाश में संसार-भर के म्यूजियम परे-
शान हैं। (vii) "इस भेद को मेरे सिवाय मेरा ईश्वर ही
जानता है। आप उसी से पूछ लीजिए, मैं नहीं बता-
ऊँगा।"
ii. इस कहानी में लेखक ने अनेक मुहावरों का प्रयोग
किया है। कहानी से पाँच मुहावरे चुनकर उनको वाक्य में
प्रयोग करें।
(क) आँख सेंकने के लिए भी न मिलना - (दुर्लभ होना) पुरानी चीजें
तो आजकल आँख सेंकने के लिए भी नहीं मिलती हैं।
(ख) आँखों से खा जाना (क्रोधित होना) - काँच का गिलास
टूटने पर उसने बच्चों को ऐसे देखा मानो उन्हें आँखों से ही खा
जाएगा।
(ग) बाप डमरु, माँ चिलम - (बेढंगा सा आकार) - सौरभ के
डिब्बे का आकार देख ऐसा लगता है, जैसे उसका बाप डमरु
तथा माँ चिलम रही होगी।

Scanned with CamScanner

(घ) डींगे हाँकना - (झूठी प्रशंसा सुनना) - अपनी बहादुरी की इतनी डींगे मत सुनाओ।

(ङ) चैन की नींद सोना - (निश्चिंत होना) - परीक्षा के बाद मैं चैन की नींद सोया हूँ।

बहुविकल्पीय प्रश्न -

i. लाला झाड़ूलाल की पत्नी ने उनसे कितने रुपये की माँग की?
(क) पाँच सौ (ख) दो सौ (ग) चार सौ (घ) ढाई सौ।
उत्तर - (घ)

ii. लालाजी ने कितने दिन में पैसे देने का वायदा किया?
(क) सात दिन (ख) चार दिन (ग) दस दिन (घ) पाँच दिन।
उत्तर - (क)

iii. अंग्रेज के मित्र ने जहाँगीरी अंडा कितने रुपये में खरीदा था?
(क) छः सौ (ख) ढाई सौ (ग) तीन सौ (घ) सात सौ।
उत्तर - (ग)

iv. बिलवासी मिश्र ने ढाई सौ रुपये किसके संदूक से निकाले थे?
(क) पत्नी (ख) माता (ग) पिता (घ) भाई।
उत्तर - (क)

v. किसकी डींग सुनते-सुनते अंग्रेज के कान पक गये थे?
(क) लालाजी (ख) मेजर डगलस (ग) मेजर रॉबिन्स
(घ) मेजर स्टीफन।
उत्तर - (ख)

Scanned with CamScanner

व्याकरण

सन्धि — दो वर्णों के मेल से होनेवाले विकार को सन्धि कहते हैं। जैसे
अ + ई = ए , देव + इन्द्र = देवेन्द्र ।

सन्धि के भेद — (I) स्वर संधि - दो स्वरों के मेल से उत्पन्न विकार अथवा रूप-परिवर्तन को 'स्वरसन्धि' कहते हैं। जैसे - शिव + आलय = शिवालय

स्वर सन्धि के प्रकार - (क) दीर्घ स्वर सन्धि - दो सवर्ण स्वर मिलकर दीर्घ हो जाते हैं। जैसे, अ + अ = आ, अन्न + अभाव = अन्नाभाव ।

(ख) गुण स्वर संधि - यदि 'अ' या 'आ' के बाद इ, ई, उ, ऊ या ऋ आये तो दोनों मिलकर क्रमशः ए, ओ और अर् हो जाते हैं। जैसे-
अ + ई = ए , देव + ईश = देवेश, अ + उ = ओ - चन्द्र + उदय = चन्द्रोदय,
अ + ऋ = अर् - देव + ऋषि = देवर्षि ।

(ग) वृद्धि संधि - यदि अ या आ के बाद ए या ऐ हो तो दोनों के स्थान में ऐ, ओ या औ आये तो दोनो के स्थान पर औ हो जाता है, जैसे - अ + औ = औ - परम + औषध = परमौषध ।

(घ) यण् सन्धि - यदि इ, ई, उ, ऊ या ऋ के बाद कोई भिन्न स्वर आये तो इ-ई का य्, उ-ऊ का व् , और ऋ का र् हो जाता है। जैसे-
इ + अ = य् - यदि + अपि = यद्यपि, अ + उ = व् - अति + उत्तम = अत्युत्तम,
अनु + अय = अन्वय , ऋ + आ = र् - पितृ + आदेश = पित्रादेश ।

(ङ) अयादि सन्धि - यदि ए, ऐ, ओ, औ के बाद कोई भिन्न स्वर आये तो ए का अय्, ऐ का आय् , ओ का अव्, तथा और औ का आव् हो जाता है। जैसे - ने + अन = नयन , नै + अक = नायक , पो + अन = पवन,
पौ + अक = पावक ।

II. व्यंजन संधि - व्यंजन से स्वर अथवा व्यंजन के मेल से उत्पन्न विकार को व्यंजन संधि कहते हैं। जैसे - दिक् + गज = दिग्गज ।

नियम - (क) यदि क्, च्, ट्, त्, प् के बाद किसी वर्ग का तृतीय या चतुर्थ वर्ण आये या य, र, ल, व या कोई स्वर आये तो क्, च्, ट्, त्, प् के स्थान में अपने ही वर्ग का तीसरा वर्ण हो जाता है। जैसे-
अच् + अन्त = अजन्त, सत् + वाणी = सद्वाणी, जगत् + आनंद = जगदानंद ।

(ख) यदि क्, च्, ट्, त्, प् के बाद न या म हो तो क्, च्, ट्, त्, प् अपने वर्ग के पंचम वर्ण में बदल जाता है। जैसे - उत् + नति = उन्नति ।

(ग) यदि म् के बाद कोई स्पर्श व्यंजन हो तो म् का अनुस्वार या बादवाले वर्ण के वर्ग का पंचम् वर्ण हो जाता है। जैसे - अहम् + कार = अहंकार, अहङ्कार
किम् + चित = किंचित , किञ्चित ।

Scanned with CamScanner

(क) यदि 'त्-द्' के बाद 'ल' रहे तो त्-द् 'ल' में बदल जाता है तथा न् के बाद 'ल' रहे तो 'न्' का अनुनासिक के साथ 'ल' हो जाता है। जैसे-
उत् + लास = उल्लास, महान् + लाभ = महाँल्लाभ ।

(ड) यदि वर्गों के अंतिम वर्णों को छोड़ शेष वर्णों के बाद 'ह' आये तो 'ह' पूर्व वर्ण के वर्ग का चतुर्थ वर्ण हो जाता है तथा 'ह' के पूर्व वाला वर्ण अपने वर्ग का तृतीय वर्ण हो जाता है। जैसे - उत् + हत = उद्धत, वाक् + हरि = वाग्घरि ।

(च) ह्रस्व स्वर के बाद 'छ' हो तो 'छ' के पहले 'च्' जुड़ जाता है। दीर्घ स्वर के बाद 'छ' होने पर यह विकल्प से होता है। जैसे -
परि + छेद = परिच्छेद, शाला + छादन = शालाच्छादन ।

विसर्ग संधि - विसर्ग के साथ स्वर या व्यंजन के मेल से जो विकार होता है, उसे विसर्ग संधि कहते हैं। जैसे -
धनु + टंकार = धनुष्टंकार, निः + चय = निश्चय ।

नियम - (क) यदि विसर्ग के बाद 'च-छ' हो तो विसर्ग का 'श्', 'ट-ठ' हो तो 'ष्' तथा 'त-थ' हो तो 'स्' हो जाता है। जैसे -
निः + छल = निश्छल, ततः + ठकार = ततष्ठकार, निः + सार = निस्सार ।

(ख) यदि विसर्ग के पहले इकार या उकार आये और विसर्ग के बाद का वर्ण क, ख, प, फ हो तो विसर्ग का 'ष्' हो जाता है। जैसे -
निः + पाप = निष्पाप, निः + फल = निष्फल ।

(ग) यदि विसर्ग के पहले 'अ' हो और बाद में क, ख, प, फ में से कोई वर्ण हो तो विसर्ग ज्यों का त्यों रह जाता है। जैसे - प्रातः + काल = प्रातः काल ।

(घ) यदि 'इ-उ' के बाद विसर्ग हो तथा उसके बाद 'र' आये तो 'इ-उ' का क्रमशः ई, ऊ हो जाता है और विसर्ग लुप्त हो जाता है। जैसे -
निः + रस = नीरस, निः + रोग = नीरोग।

(ङ) यदि विसर्ग के पहले अ और आ को छोड़कर कोई दूसरा वर्ण आये और विसर्ग के बाद कोई स्वर हो या किसी वर्ग का तृतीय, चतुर्थ या पंचम वर्ण हो या य, र, ल, व, ह हो तो विसर्ग के स्थान पर 'र' हो जाता है। जैसे - दुः + गन्ध = दुर्गन्ध, निः + जल = निर्जल, निः + धन = निर्धन ।

(च) यदि विसर्ग के पहले 'अ' आये और उसके बाद वर्ग का तृतीय, चतुर्थ या पंचम वर्ण आये या य, र, ल, व, ह रहे तो विसर्ग का 'उ' हो जाता है तथा यह 'उ' पूर्ववर्ती 'अ' से मिलकर गुण संधि द्वारा 'ओ' हो जाता है। जैसे - मनः + रथ = मनोरथ।

(छ) यदि विसर्ग के आगे-पीछे 'अ' हो तो पहला 'अ' और विसर्ग मिलकर 'ओ' और बादवाले 'अ' का लोप होकर उसके स्थान पर लुप्ताकार (ऽ) का चिन्ह लगा जाता है।
जैसे - प्रथमः + अध्यायः = प्रथमोऽध्यायः, यशः + अभिलाषी = यशोऽभिलाषी।

Scanned with CamScanner

अनेक शब्दों के लिए एक शब्द –

जिसके पाणि में चक्र हो – चक्रपाणि, जिसके चार भुजाएँ हैं - चतुर्भुज, जिसके दश आनन हैं – दशानन, जिसके आने की तिथि न हो – अतिथि, जिसके शेखर पर चन्द्र हो - चन्द्रशेखर, जिसके समान दूसरा न हो – अद्वितीय, जिसके पार देखा जा सके - पारदर्शक, जिसके हृदय में ममता नहीं - निर्मम, जिसके हृदय में दया नहीं - निर्दय, जिसकी ग्रिवा सुंदर हो - सुग्रीव, जिसके दो पैर हैं - द्विपद, जो सर्वशक्ति सम्पन्न हो - शक्तिमान, जिसका कोई नाथ न हो - अनाथ, जिसका कोई शत्रु न जन्मा हो - अजातशत्रु, जो पृथ्वी से सम्बद्ध है - पार्थिव, जिसकी उपमा न हो - अनुपम, जो कम जानता है - अल्पज्ञ, जो कुछ नहीं जानता है - अज्ञ, जो मृग के गर्भ का हाल जानता हो - मृगमवेत्ता, स्वेद से उत्पन्न होनेवाला - स्वेदज, जो सबमें व्याप्त है - सर्वव्यापी, इन्द्रियों को जीतनेवाला - जितेन्द्रिय, जो स्त्री के वशीभूत हो - स्त्रैण, भविष्य में होनेवाला - भावी, जो कला जानता है - कलाविद, कलाकार, जो सरोवर में जन्मता है सरसिज, जो पर के अधीन है - पराधीन, जो देखने में प्रिय लगता है - प्रियदर्शी, आया हुआ - आगत, लोक का - लौकिक, परलोक का - पारलौकिक, जो स्त्री अभिनय करे - अभिनेत्री, जो दूसरों से ईर्ष्या करता है - ईर्ष्यालु,

श्रुतिसम भिन्नार्थक शब्द –

अविराम = लगातार	फन = कला	वर्ण = रंग, अक्षर, जाति
अभिराम = सुंदर	फण = साँप का फण	व्रण = घाव
अंगना = स्त्री	बलि = बलिदान	सर = तालाब
आँगना = घर का आँगन	बली = बलवान	शर = बाण
आसन्न = निकट	बदन = शरीर	शुचि = पवित्र
आसन = बैठने की वस्तु	वदन = मुख	सूची = तालिका
असन = भोजन	बान = आदत	शाला = घर
कुल = वंश	बाण = तीर	साला = पत्नी का भाई
कूल = किनारा	मास = महीना	सुधी = विद्वान
तरणी = नाव	माँस = गोश्त	सुधि = याद
तरुणी = युवति	राज = शासन	सूत = धागा
तरणि = सूर्य	राज = रहस्य	सुत = पुत्र
परिक्षा = कीचड़	लक्ष = लाख	सहर = सवेरा
परीक्षा = इम्तहान	लक्ष्य = उद्देश्य	शहर = नगर

Scanned with CamScanner

विपरीतार्थक शब्द

अवनति = उन्नति, घात = प्रतिघात, अमर = नश्वर, ख्यात = कुख्यात, गद्य = पद्य, आदि = अंत, कल्पित = वास्तविक, गृही = संन्यासी, अनुग्रह = निग्रह, गुरु = लघु, चल = अचल, अंतरंग = बहिरंग, चर = अचर, अनुकूल = प्रतिकूल, चंचल = शांत, अधम = उत्तम, ज्येष्ठ = कनिष्ठ, जड़ = चेतन, अपेक्षा = उपेक्षा, अकाल = सुकाल, अनुरक्त = विरक्त, विधि = निषेध, प्रवृत्ति = निवृत्ति, आस्था = अनास्था, निषिद्ध = विहित, आगत = अनागत, सापेक्ष = निरपेक्ष, इहलोक = परलोक, प्रलय = सृष्टि, सूक्ष्म = स्थूल, कटु = मधु।

पर्यायवाची शब्द — अमृत - सुधा, मधु, पीयूष। असुर - दानव, राक्षस, दैत्य। इच्छा - कामना, मनोरथ, आकांक्षा। उन्नति - उत्थान, विकास, उत्कर्ष। कामदेव - मदन, अनंग, मन्मथ। किरण - रश्मि, मयूख, मरीचि। किनारा - तट, तीर, कूल। चतुर - चालाक, निपुण, प्रवीण। चोर - खनक, कुंभिल। दुःख = वेदना, कष्ट, पीड़ा। यमुना = कालिंदी, कृष्णा। धन = सम्पत्ति, दौलत, ऐश्वर्य। नाव = तरणी, नौका, जलयान। नरक = यमलोक, कुंभीपाक, रौरव। प्रकाश = ज्योति, चमक, आलोक। बिजली = चपला, दामिनी, सौदामिनी। भ्रमर = अलि, भौंरा, मधुकर। मछली = मीन, मत्स्य, सफरी। मृत्यु = मौत, मरण, देहांत। मोक्ष = निर्वाण, मुक्ति, परमपद।

क्रिया से भाववाचक संज्ञा बनाइए — कहना = कथन, खोजना = खोज, जोड़ना = जोड़, खाना-पीना = खान-पान, जीतना = जीत, सजाना = सजावट, कमाना = कमाई, माँगना = माँग, घबराना = घबराहट, पीसना = पिसाई, बचना = बचाव, समझना = समझ, देना = देन, धोना = धुलाई, हँसना = हँसी।

विशेषण से भाववाचक संज्ञा बनाइए — अधिक = आधिक्य, उपयोगी = उपयोगिता, ऊँचा = ऊँचाई, खुश = खुशी, गरीब = गरीबी, गुरु = गुरुत्व, कुशल = कुशलता, चतुर = चतुराई, चिकना = चिकनाहट, जटिल = जटिलता, जातीय = जातीयता, तीव्र = तीव्रता, दीन = दीनता, दयालु = दयालुता, बूढ़ा = बुढ़ापा, भारतीय = भारतीयता, भावुक = भावुकता, प्राचीन = प्राचीनता, रक्त = रक्तता, राष्ट्रीय = राष्ट्रीयता, लघु = लघुता, लाल = लालिमा, विधवा = वैधव्य, सभ्य = सभ्यता, स्वीकृत = स्वीकृति, हार्दिक = हार्दिकता।

जातिवाचक संज्ञा से भाववाचक संज्ञा बनाइए — जाति = जातीयता, भाई = भाईचारा, पशु = पशुत्व, लड़का = लड़कपन, जवान = जवानी, बच्चा = बचपन, मनुष्य = मनुष्यत्व, पुरुष = पौरुष, अंधा = अंधत्व, नारी = नारीत्व, पात्र = पात्रता, स्त्री = स्त्रीत्व, मित्र = मित्रता।

Scanned with CamScanner